आज़ादी का अमृत महोत्सव

छठा अंक
2021-2022

हृदयंगम

राजभाषा पत्रिका

डी.जी.एच.

हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय

भारत सरकार

गठन

डीजीएच का गठन भारत सरकार के संकल्प पर आधारित पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन दिनांक 8 अप्रैल 1993 को हुआ है।

उद्देश्य

डीजीएच का उद्देश्य सुरक्षा, प्रौद्योगिकीय, पर्यावरण और आर्थिक पहलुओं में संतुलन रखते हुए पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस स्रोतों और अपारंपरिक हाइड्रोकार्बन ऊर्जा स्रोतों के अन्वेषण और सुदृढ़ प्रबंधन को प्रोन्नत करना है।

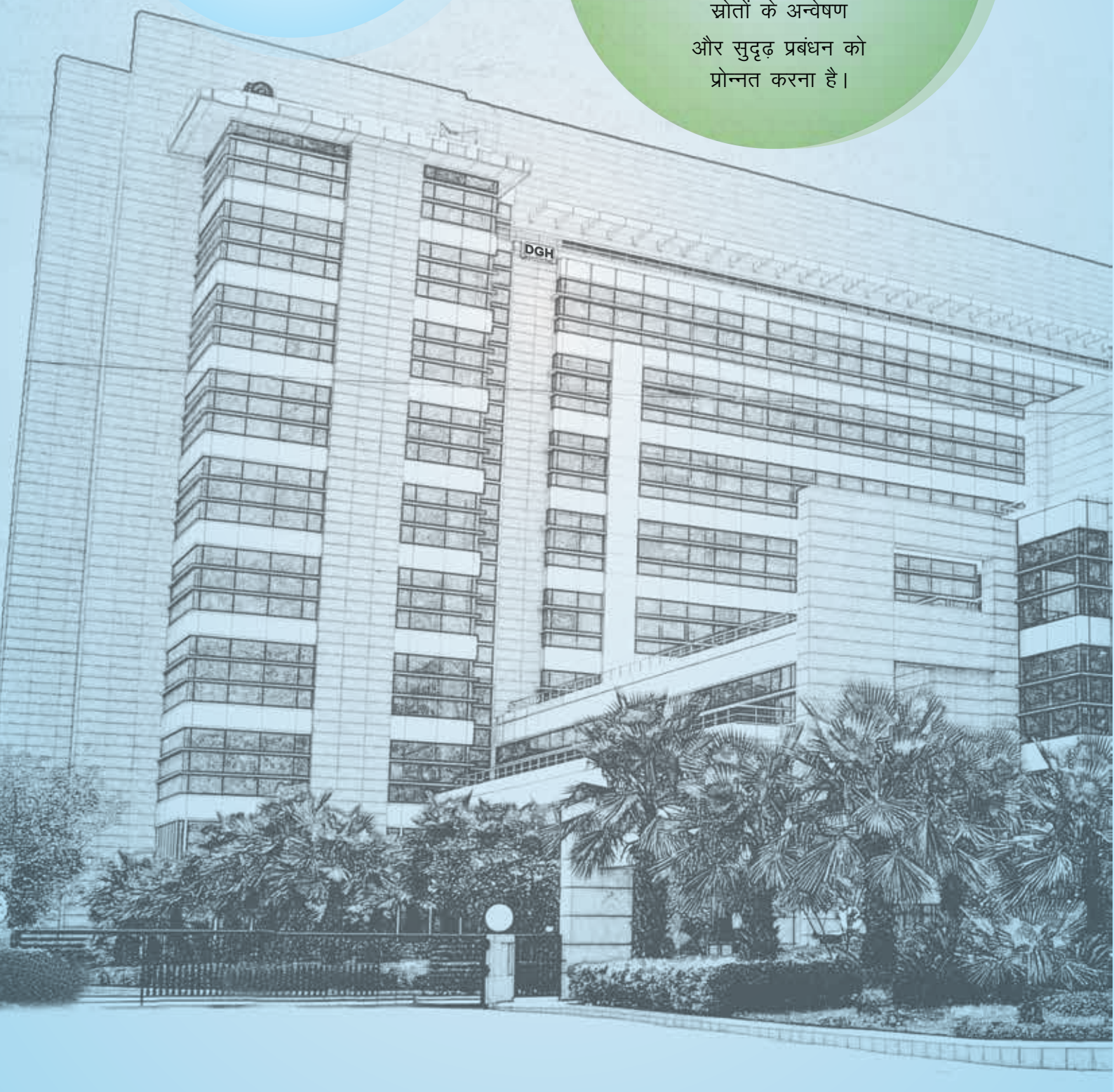

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हृदयंगम

राजभाषा पत्रिका

डी.जी.एच.

हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय

भारत सरकार

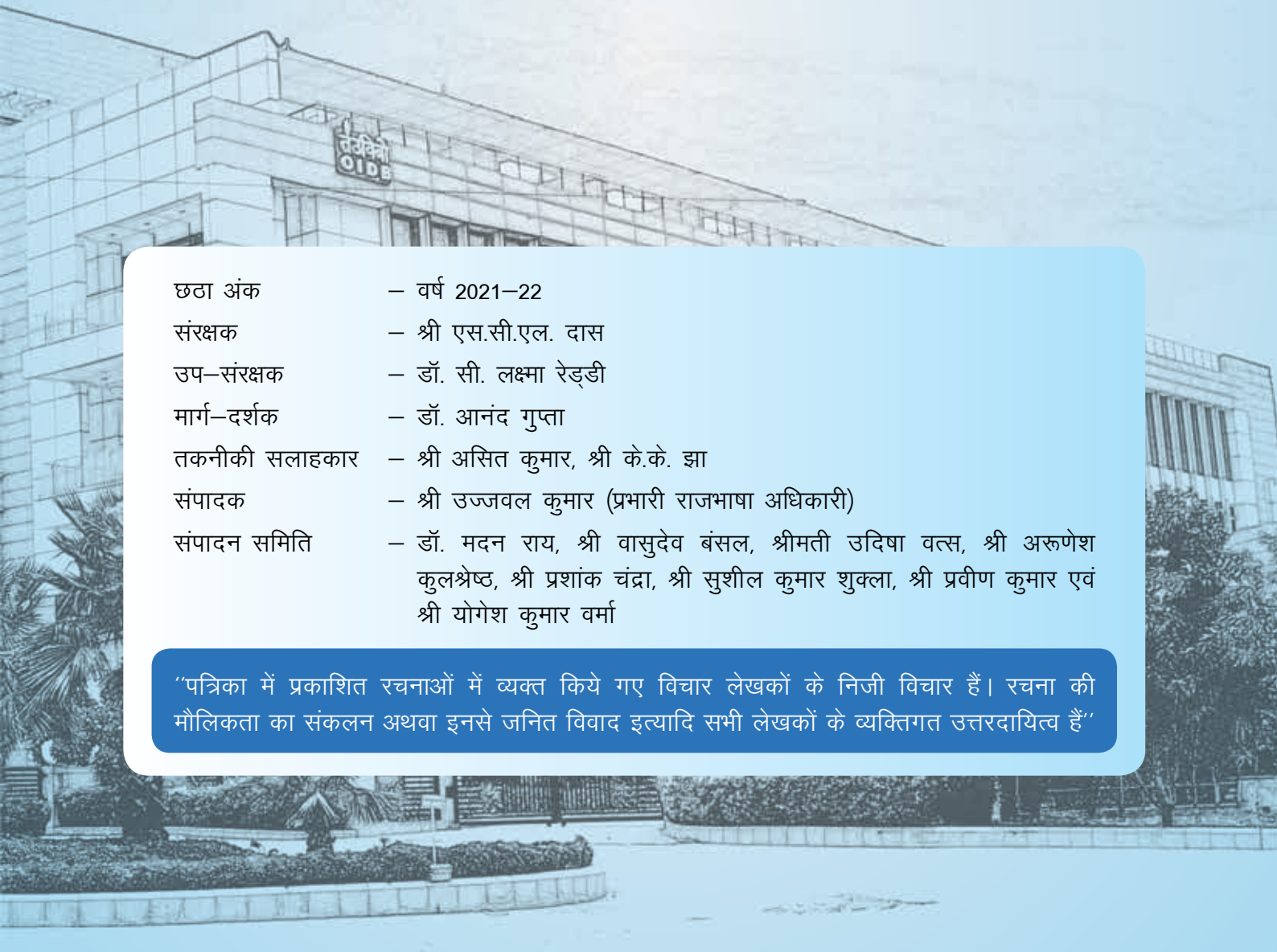

छठा अंक	– वर्ष 2021–22
संरक्षक	– श्री एस.सी.एल. दास
उप–संरक्षक	– डॉ. सी. लक्ष्मा रेड्डी
मार्ग–दर्शक	– डॉ. आनंद गुप्ता
तकनीकी सलाहकार	– श्री असित कुमार, श्री के.के. झा
संपादक	– श्री उज्जवल कुमार (प्रभारी राजभाषा अधिकारी)
संपादन समिति	– डॉ. मदन राय, श्री वासुदेव बंसल, श्रीमती उदिषा वत्स, श्री अरूणेश कुलश्रेष्ठ, श्री प्रशांक चंद्रा, श्री सुशील कुमार शुक्ला, श्री प्रवीण कुमार एवं श्री योगेश कुमार वर्मा

''पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त किये गए विचार लेखकों के निजी विचार हैं। रचना की मौलिकता का संकलन अथवा इनसे जनित विवाद इत्यादि सभी लेखकों के व्यक्तिगत उत्तरदायित्व हैं''

महानिदेशक का संदेश

साथियो,

आप सभी को विदित ही है कि हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय की स्थापना पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक तकनीकी और परामर्शी संस्थान के रूप में की गई थी जो देश को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्य कर रहा है। अपनी इस महत्वपूर्ण भूमिका के साथ–साथ यह संस्थान अपने अन्य वैधानिक दायित्वों, जिसमें राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन भी शामिल है के प्रति भी पूर्णतः सजग एवं समर्पित है।

उपरोक्त क्रम में महानिदेशालय की हिंदी पत्रिका 'हृदयंगम' का छठा अंक आप सभी को सौंपते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता है। इस पत्रिका के छठे अंक तक की यात्रा को देखते हुए यहाँ कार्यरत अधिकारियों और कर्मचारियों की सृजनात्मकता और अभिव्यक्ति से हिंदी के प्रति उनके लगाव और निष्ठा का स्पष्ट परिचय मिलता है। अपने आरंभ से लेकर अब तक इस पत्रिका के स्वरूप और कलेवर में निरंतर निखार आता गया है।

पत्रिका के पिछले अंकों में विविध विषयों पर लेख लिखे गए हैं। इनमें कविता कहानी, संस्मरण आदि के अतिरिक्त हाइड्रोकार्बन के अन्वेषण और उत्पादन से संबंधित हिंदी में लिखे तकनीकी लेखों को आम पाठकों तक पहुँचाया गया है जो एक सराहनीय उपलब्धि है।

पत्रिका के अब तक के छः संस्करणों में हाइड्रोकार्बन अन्वेषण और उत्पादन तथा पर्यावरण–संरक्षण आदि विषयों पर कम से कम तीन दर्जन से अधिक तकनीकी लेख प्रकाशित किए गए हैं। यह एक महत्वपूर्ण कार्य है और महानिदेशालय की कार्यप्रणाली और इसकी तकनीकी विशेषज्ञता को हिंदी में प्रस्तुत करने का एक अनूठा प्रयास है।

'हृदयंगम' के इस अंक को सृजनात्मक और पठनीय बनाने के लिए संपादन समिति के सदस्य बधाई के पात्र हैं।

शुभकामनाओं सहित!

(एस. सी. एल. दास)

अपर महानिदेशक का संदेश

हम सभी को विदित है कि भाषा संप्रेषण का अद्वितीय माध्यम है जिससे विचारों का आदान–प्रदान संभव है। हिंदी गृहपत्रिका 'हृदयंगम' ने इसी संवाद की एक कड़ी के रूप में कार्य करते हुए प्रथम अंक से छठे अंक तक की अपनी महत्वपूर्ण प्रकाशन यात्रा सुनिश्चित की है। वर्तमान प्रकाशन तक आते–आते पत्रिका का दिनों दिन परिष्कार होता चला गया है। 'हृदयंगम' के विगत अंकों में कहानी, कविता, संस्मरण और विभिन्न विषयों पर लिखे गए लेख अत्यंत पठनीय और संग्रहणीय हैं। इसके अतिरिक्त हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय की अपनी मुख्य कार्यप्रणाली, जिसमें पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस का अन्वेषण और उत्पादन कार्य क्षेत्र शामिल है, से संबंधित गतिविधियों पर हिंदी में लिखे गए तकनीकी लेखों को आम पाठकों तक पहुचाना इसका मुख्य उद्देश्य रहा है। अपने पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस के अन्वेषण और उत्पादन के दौरान पर्यावरण संरक्षण के अनुकूल हरित प्रौद्योगिकी को अपनाने से संबंधित लेखों को भी पत्रिका में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है जो इसके 'गठन' और 'उद्देश्य' से प्रेरित है।

यहाँ उल्लेखनीय है कि हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय में देश के अधिकांश लोगों द्वारा बोली और समझी जाने वाली संघ की राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिसमें हिंदी पखवाड़ा, विश्व हिंदी दिवस तथा अन्य साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन भी शामिल है।

आप सभी से अनुरोध कि आप अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करें और सरल हिंदी का प्रयोग करते हुए अपनी भाषा और राष्ट्र के गौरव में वृद्धि करें।

शुभकामनाओं सहित,

सी. लक्ष्मा रेड्डी

(डॉ. सी लक्ष्मा रेड्डी)
अपर महानिदेशक (अन्वेषण)

प्रभारी राजभाषा अधिकारी का संदेश

हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय के अधिकारियों और कार्मिकों में भाषा के प्रति लगाव और अनुराग की भावना विकसित करने के उद्देश्य से 'हृदयंगम' नामक हिंदी पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया गया था। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार और प्रगति के लिए इस प्रकार की पत्रिकाओं का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कदम है। भूमंडलीकरण के इस दौर में भाषाओं की अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका और पहचान है। अपने देश में इस भूमिका को हिंदी ही निभा सकती है। दुनिया भर के देशों को अपनी – अपनी भाषाओं पर गर्व है, खास कर एशिया के देश भी इसके महत्त्व को अच्छी तरह समझते हैं और वे अपनी दैनिक जीवन और काम–काज में अपनी भाषाओं का ही प्रयोग करते हैं। जापान, कोरिया, चीन तथा इंडोनेशिया आदि की मातृभाषाएँ इसका उदाहरण हैं। इस लिए हमें भी अपनी भाषा हिंदी के प्रयोग में संकोच नहीं बल्कि गर्व करना चाहिए। यह न केवल जनमानस की भाषा है बल्कि संस्कृति की पहचान और वैधानिक दायित्वों को भी पूरा करती है जैसा कि गाँधी जी ने कहा था **"यदि हम अंग्रेजी के आदी नहीं हो गए होते तो यह समझने में देर नहीं लगती कि अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाने से हमारी बौद्धिक चेतना जीवन से कट कर दूर हो गई है। इस दुर्गति की मिसाल सारी दुनिया के इतिहास में नहीं है। यह तो राष्ट्रीय शोक का विषय है। आज की सबसे पहली और सबसे बड़ी समाज सेवा यह है कि हम अपनी देशी भाषाओं और हिंदी को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करें"**।

पत्रिका के इस अंक में, साहित्य, समाज और जीवन के विविध क्षेत्रों से जुड़ी रचनाएं शामिल की गई हैं। मैं, हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय के उन सभी अधिकारियों और कार्मिकों को बधाई देता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका के लिए अपने लेख लिखे हैं और अन्य सभी अधिकारियों और कार्मिकों का आह्वान करता हूँ कि वे भविष्य में भी इस पत्रिका के माध्यम से अपने विचारों और ज्ञान को साझा करें।

पत्रिका में आप सभी के सहयोग के लिए धन्यवाद और शुभकामनाएं।

उज्जवल कुमार

(उज्जवल कुमार)
प्रभारी राजभाषा अधिकारी

अनुक्रमणिका

सं.	लेख	पेज
1	ऊर्जा प्रबंधनः आज की जरूरत : डॉ. मदन राय	8
2	एक फौजी का अंतर्मन : अभिनव कुमार	11
3	आज का धर्म : नरेन्द्र गिरि	12
4	देश की एकता और अखंडता में हिंदी भाषा का महत्व और योगदान : उदिषा वत्स	13
5	पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति : योगिता	16
6	ग़ज़ल : प्रशांक चंद्रा	21
7	मन का संघर्ष : कुमार प्रभाकर	22
8	घृणा तो केवल खाक लिखती है : अजय कुमार शर्मा	23
9	योग का जीवन शैली पर प्रभाव : सुनील खत्री	24
10	रम्माण उत्सव : पूरन सिंह मेहरा	26
11	शेयर बजार : राकेश जैन	28
12	संगति का असर : नीलम सचान	30
13	उल्टी यात्रा : लक्ष्मण सिंह	31
14	सर्वे भवन्तु सुखिन : जानकी मेहरा (पत्नी, श्री पूरन सिंह मेहरा)	33
15	झूठ का कारोबार : तसनीम फातिमा	36
16	टीटी की नौकरी : वासुदेव बंसल	37
17	दया : रिंकू यादव (पत्नी, श्री सुदीप राय)	39
18	दो नन्हीं आँखें : श्रीमती प्रभा कुमार (पत्नी, श्री सिद्धार्थ कुमार)	40
19	परिवार : योगक्षेम शर्मा	41
20	बारिश : आलोक कुमार	43
21	यादों कि डायरी : रुपेश कुमार	44
22	रूस– यूक्रेन संघर्ष और वैश्विक ऊर्जा संकट : पूनम चुघ	45
23	वक्त का खेल : गीता पाल	48
24	विश्व वेदना : पुष्पा मिश्रा (माता, श्री आश्चर्य चौबे)	49
25	वो बचपन का सुकून : पूजा वर्मा	50
26	महाद्वीप अचल नहीं, गतिमान हैं : असित कुमार	51

डॉ. मदन राय
(परामर्शदाता राजभाषा)

1 ऊर्जा प्रबंधन : आज की जरुरत

भारत एक विकासशील देश है और विकसित देशों की पंक्ति में शामिल होने के लिए प्रयत्नशील है किन्तु इसके लिए सर्वाधिक चुनौती पूर्ण स्थिति यह है कि ऊर्जा के क्षेत्र में यह कमी वाला देश है। ऐसी स्थिति में ऊर्जा के प्रतिदिन घटते स्रोत और इसके बढ़ते मूल्यों ने ऊर्जा की दृष्टि से हमें औद्योगिक संपन्न देशों की तुलना में अलाभकारी स्तिथि में ला खड़ा किया है। यद्यपि अमेरिका, इंग्लेंड, फ्रांस तथा कनाडा आदि विकसित देशों की तुलना में हमारी प्रति व्यक्ति ऊर्जा खपत काफी कम है, किंतु विशाल जनसंख्या, वाहनों की संख्या में वृद्धि और ओद्यौगिक गतिविधियों के चलते भारत आज दुनिया का तीसरा सर्वाधिक वाणिज्यक ऊर्जा उपयोग करने वाला देश बन गया है।

जापान, सिंगापुर और कोरिया जैसे देशों से हमें यह उदाहरण मिलता है कि केवल ऊर्जा की अधिकता मात्र से नहीं बल्कि इसके समुचित प्रयोग और प्रबंधन द्वारा वांछित आर्थिक विकास को गति प्रदान किया जा सकता है। यद्यपि भारत में ऊर्जा के संरक्षण का महत्त्व बढ़ रहा है किंतु स्कूलों तथा कॉलेजों के विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रमों में ऊर्जा शिक्षा को पाठ्य–पुस्तक में शामिल नहीं किया गया है।

यद्यपि ऊर्जा योजना को राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय दोनों, स्तरों पर बेहतर ढंग से मान्यता प्राप्त है किंतु जहां तक संरक्षण गतिविधि का प्रश्न है, ऊर्जा प्रबंधन के अंतर्गत विषय की लघुता के कारण भारत में अब तक इस पर समुचित ध्यान नहीं दिया गया है। आशा की जाती है कि प्रस्तावित ऊर्जा संरक्षण बिल जब कानून का रूप लेगा तब इस दिशा में वांछित गति मिल सकेगी। प्रस्तावित ऊर्जा संरक्षण बिल में यह व्यवस्था है कि उसमें ऊर्जा के थोक उपयोगकर्ताओं की पहचान कर, उनके लिए निर्धारित अवधि के अंतराल में ऊर्जा लेखा परीक्षा संपन्न कराना अनिवार्य बन जाएगा। इसमें निर्धारित उपभोक्ताओं द्वारा ऊर्जा उपभोग की सूचना देने, उनके द्वारा संरक्षण योजनाएं बनाने और अपने कार्य–स्थलों का प्राधिकृत प्रतिनिधियों द्वारा जांच करने की अनुमति देने का प्रावधान शामिल है। वैधानिक आवश्यकताओं की पूर्ति तथा अपनी संरक्षण लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उद्योग को बड़ी संख्या में प्रशिक्षित प्रबंधकों की आवश्यकता होगी। इसके लिए ऊर्जा प्रबंधन के लिए गुणात्मक तथा मात्रात्मक दोनों को बड़े पैमाने पर चलाने की आवश्यकता पड़ेगी। प्रशिक्षण, प्रबंधन के पाठ्यक्रमों में ऊर्जा संरक्षण प्रशिक्षण सामग्री का एक महत्वपूर्ण अंग

होगा। 'ऊर्जा की बचत का अर्थ है ऊर्जा उत्पादन' जो इसमें मूल मंत्र के रूप में समाहित होगा।

वर्तमान स्थिति और अनिवार्यता

देश में ऊर्जा संरक्षण और प्रबंधन के क्षेत्र में परामर्श एवं प्रशिक्षण की मांग 1973 के प्रथम तेल संकट के समय से ही तीव्र होने लगा था। बहुत ही छोटे स्तर पर आरंभिक शुरुआत के बावजूद उद्योगों में ऊर्जा संरक्षण की वृहत् संभावनाओं एवं क्षमताओं की पहचान की गई। 1979 में द्वितीय तेल संकट के आरंभ ने इस क्षेत्र की संभावना और क्षमता को काफी बढ़ा दिया। आज ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में 150 से भी अधिक संगठनों की गतिविधियों में ऊर्जा परामर्श शामिल है, फिर भी इनमें गिने चुने संगठन ही ऐसे हैं जिनके यहां ऊर्जा संरक्षण एवं प्रबंधन को मुख्य सरोकार की भूमिका में शामिल किया गया हैं।

अपने यहाँ इस क्षेत्र में धीमी प्रगति का मुख्य कारण ऊर्जा का गैर आर्थिक मूल्य निर्धारण है विशेषकर विद्युत, मिट्टी का तेल तथा एलपीजी आदि अत्यंत कम लागत पर उपलब्ध कराए जाते हैं, इसके अतिरिक्त बड़े स्तर विद्युत की चोरी भी होती है। चूंकि उपभोक्ताओं को उपर्युक्त ऊर्जा लागत से काफी कम कीमत पर उपलब्ध है। अतः बचत के प्रति उनकी चिंता काफी कम ही होती है। ऊर्जा विनायक प्रधिकरण की स्थापना के पश्चात जब उर्जा संरक्षण बिल लागू होगा तब सेवाओं की मांग में अवश्य बढ़ोत्तरी होगी। संरक्षण कानूनों के लागू होने पर बाजार में गैर प्रगुण ऊर्जा उपकरणों तथा यंत्रों की बजाय पर्यावरण अनुकूल ऊर्जा प्रगुण उपकरणों को प्रोत्साहन मिलेगा तथा पुराने किस्म के उपकरणों / यंत्रों को समाप्त कर दिया जाएगा।

देश में वर्तमान ऊर्जा प्रबंधन परामर्शदाता लाभ से हटकर कार्य करने वाले संगठनों अध्ययन एवं अनुसंधान संस्थानों के विशेषज्ञ परामर्शदाताओं, ऊर्जा निर्मित करने वाली कंपनियों तथा उद्योग कैपटिव इकाइयों से आते हैं। यह ऊर्जा प्रबंधन तथा संरक्षण के विभिन्न पहलुओं के संबद्ध अनेक प्रकार की सेवाएं उपलब्ध कराते हैं। इसके अतिरिक्त, भारत में ऊर्जा सेवा की अवधारणा की शुरुआत गिने–चुने ऊर्जा कंपनियों के इस क्षेत्र में प्रवेश के साथ आरंभ हुई है।

ऊर्जा शिक्षा तथा ऊर्जा प्रशिक्षण के क्षेत्र आईआईटी दिल्ली खड़गपुर मुंबई एन पी सी सी, सी एफ आर आई, भारती दासन विश्वविद्यालय, डी ए वी वी, इंदौर आदि कुछ प्रमुख संस्थान हैं जो इससे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े हैं। एक आकलन के अनुसार इन संस्थानों के लगभग 2000 इंजीनियरों ने ऊर्जा प्रबंधन के क्षेत्र में उच्च स्तरीय प्रशिक्षण प्राप्त किया है जो बी टेक, एम टेक या स्नाकोत्तर डिप्लोमा प्रशिक्षण प्राप्त किया है। इसके अतिरिक्त आई आई एम, बैंगलोर तथा ए एस सी आई, हैदराबाद आदि संगठनों ने भी ऊर्जा–योजनाकारों के लिए पाठ्यक्रम चलाया है। पुणे विश्वविद्यालय तथा गुरु नानक देव विश्वविद्यालय ने नवीकरण ऊर्जा (रिनिवेबल एनर्जी) स्रोतों पर स्नाकोत्तर पाठ्क्रम आरंभ किया है।

प्रशिक्षण आवश्यकताएं तथा पाठ्यक्रम

स्पष्ट है कि किसी औद्योगिक इकाई में ऊर्जा प्रबंधन ऊर्जा बचत तकनीकी के लिए एक तकनीकी परामर्शदाता की तरह कार्य करता है। ऊर्जा प्रबंधकों को दिए जाने वाले प्रशिक्षण में ऊर्जा उपयोग के तकनीकी तथा सिद्ध ांतों पर विशेष बल दिया जाना चाहिए जिसमें व्यापारिक प्रशिक्षण पर बल, विशेषतः माप तकनीकी और प्रबंधन सिद्धांत की मूल–अवधारणा प्रमुखता से शामिल हो, इससे वह अपने प्रबंध तंत्र को वित्तीय लाभों के विषय स्पष्ट रूप से जानकारी दे सकें।

इस संबंध में एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इस क्षेत्र में शिक्षा देने वाले लोगों की संख्या काफी कम है, इसलिए प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षकों तथा पाठ्यक्रमों के विषय–वस्तु पर विशेष ध्यान देना होगा।

ऊर्जा प्रबंधन के किसी भी पाठ्यक्रम में ऊर्जा प्रबंधन और संरक्षण के मूल अवधारणाओं, ऊर्जा प्रगुण प्रौद्योगिकी अपरंपरागत/नवीकृत ऊर्जा स्रोतों, पर्यावरण सुरक्षा और इस क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग को अवश्य शामिल किया जाना चाहिए।

विश्वविद्यालय/अनुसंधान एवं विकास संस्थाओं तथा उद्योगों का सहयोग

क्षेत्र में उच्च शिक्षा संस्थानों जैसे विश्वविद्यालय/भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों अनुसंधान एवं विकास संस्थानों तथा उद्योग के बीच आपसी सहयोग की नितांत अनिवार्यता है। उद्योगों की सहायता के लिए यह जरूरी है कि प्राध्यापकों को उद्योगों की समस्त समस्याओं का पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो इसके लिए उद्योगों तथा विश्वविद्यालय के बीच आपसी उच्च स्तरीय विचार विमर्श निरंतर आवश्यकता है।

सरकार की भूमिका

अर्थ–व्यवस्था के व्यापक हित में जरूरी है कि सरकार ऊर्जा प्रबंधकों का एक अलग काडर तैयार करने के लिए लघु अवधि तथा दीर्घावधि कार्य निर्धारित करें। इसके लिए दो स्तरों पर कार्रवाई की आवश्यकता है। प्रथम, राष्ट्रीय संस्थानों के योजनाकारों को अर्थव्यवस्था में ऊर्जा प्रबंधकों की समुचित संख्या में दीर्घावधि उपलब्धता सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। दूसरा, अर्थव्यवस्था के इस सहायक क्षेत्र को मुख्य क्षेत्र के समकक्ष प्रोत्साहन के लिए आकर्षक पैकेज की व्यवस्था के माध्यम से इंजीनियरों को आकर्षित किया जाना चाहिए। ऊर्जा प्रबंधकों के लिए करियर के अवसरों को आकर्षक बनाकर इस क्षेत्र में प्रतिभावना व्यक्तियों को आकर्षित किया जाना चाहिए।

इस क्षेत्र में गुणवत्ता सुनिश्चित करने, डुप्लीकेशन रोकने तथा इस क्षेत्र में कुशल एवं योग्य व्यक्तियों की कमी को दूर करने के लिए ऊर्जा संरक्षण बिल के प्रावधानों के अंतर्गत स्थापित किया जाने वाला ब्यूरो (ब्यूरो आफ एनर्जी एफिसिएंसी) को ध्यान देना होगा।

ऊर्जा प्रबंधन के लिए शिक्षा एवं प्रशिक्षण के अंतर्गत उपर्युक्त तथ्यों पर लघु अवधि तथा दीर्घावधि उद्देश्यों के अनुरूप ध्यान देना आवश्यक है। दीर्घावधि योजना के अंतर्गत ऊर्जा–प्रबंधन में शिक्षित एवं कुशल मानव संसाधन विकसित करने तथा लघुअवधि योजना के अंतर्गत मानव संसाधन के प्रशिक्षित करने का उद्देश्य शामिल होना चाहिए।

अभिनव कुमार
(अपर महानिदेशक प्रकोष्ठ)

2 एक फौजी का अंतर्मन

काया से फिसलती रूह लिए, जब फौजी शत्रु से लड़ता है,
कभी सोचा है दौरान युद्ध के,मन में उसके क्या चलता है।

जिस प्रकार दुविधा के समय, मन के दो व्यक्तित्व हो जाते हैं,
तुम पूछो क्या करना है अभी, वह दो अलग राह दिखाते हैं।

उस प्रकार मन फौजी का भी दुविधा में पड़ता होगा
बाहर का युद्ध तो अलग रहा, वो अंदर भी लड़ता होगा।

कोई चूक हुई किंचित भी अगर, तो मृत्यु दस्तक देती है
कोई खेल नहीं जो अंक कटे, वो सीधा मस्तक लेती है।

जीवन का मोह अगर उसे एक बार भी ये सोचने पर मजबूर करे कि

ये जंग तो मेरी जंग नहीं, क्यों व्यर्थ जान मैं देता हूँ
कोई देख बड़ा–सा पत्थर, मैं पीछे उसके छिप लेता हूँ।

तो तुरंत उसका अभिमान उससे बोल पड़ेगा

मौका है अमरता पाने का, तू पीछे हटे कोई अर्थ नहीं
जो जान देश के नाम हुई, वो जान भी व्यर्थ नहीं।

मारे जो गए भाई थे तेरे, उनका हिसाब अभी बाकी है
कुछ पन्ने लिखे शत्रु रक्त से, पूरी किताब अभी बाकी है।

लहरे तिरंगा हर चोटी पर, वीरों का ख्वाब अभी बाकी है
बच्चा बच्चा बन जाए भगत, वो इंकलाब अभी बाकी है।

दुश्मन के झेल प्रहारों को लड़ देह में जब तक रक्त बहे
यमराज प्राण मांगे, तू टाल, जब तक मृत्यु में वक्त रहे।

कल के सूरज को देख सके, ऐसी अब उसकी चाह नहीं
उल्टे पैरों चलना जो पड़े, ऐसी कोई उसकी राह नहीं।

कितने वादे टूटेंगे अभी जब, प्राण वो अपने त्यागेगा
फिर भी जीने का मोह लिए, न पीठ दिखा वह भागेगा।

जन्मे जिसकी भी कोख से वह तो भारत मां का बेटा है,
करते–करते रक्षा जिसकी वो ओढ़ तिरंगा लेटा है
करते–करते रक्षा जिसकी वो ओढ़ तिरंगा लेटा है।।

("इस कविता में युद्ध के दौरान एक फौजी के मन में आ रहे खयालों को व्यक्त किया गया है ")

नरेन्द्र गिरि
(वेधन)

3 आज का धर्म

धर्म एक झुनझुना है इसे चाहे बजाइए,
न बजे तो कलंगी बनाकर सिर पर लगाइए,
धर्म मुंगफली का तेल नहीं जो आपकी सब्जी पका दे,
और न ही धर्म कपड़े का थान है जो एक कुर्ता सिला दे,,

धर्म डर की मिट्टी से उपजा एक बहुनामी फूल है,
चाहे मसलिये चाहे फेंकिए चाहे तो गले में सजाइए,
आदमी को क़त्ल करने का मंजूर नाम है,
फिर भी कोई सिर पर उठाए तो उठाए,
मुझसे तो उठाया नहीं जाता सिर पर धर्म,
आप चाहे तो इसे उठाइए,,

सोचता हूँ कभी कभी जो गोली चलवाता है धर्म,
वही गोली उस धर्म के सीने में दाग दूँ,
और शोर करवा दूँ सारे जहाँ में,
जब भी, जहाँ भी नज़र आये धर्म,
गले में बांधकर पत्थर डूबा दूँ उसे समुद्र में,,

धर्म ने बांट दिया है, आज इन्सान को,
बाप भी बांटा, बेटा भी बांटा, मत बांटो इस जहान को,,

तोड़ दो धर्म की इस दीवार को और अपने,
जज्बातों और प्रेम को दो महत्व इसी का नाम धर्म है,
प्रेम, जज्बातों के महत्त्व का न ही धर्म है,
तोड़ दो इस धर्म में घृणा की दीवार को,,

उदिषा वत्स
(भूविज्ञान और भूभौतिकी)

4 देश की एकता और अखंडता में हिंदी भाषा का महत्व और योगदान

जन–जन की भाषा है हिंदी,
शुभता का सृजन करती है हिंदी,
दिव्य गुणों से परिमार्जित होकर,
एकता को सदैव प्रसारित करना,
विश्व बंधुत्व को परिभाषित करना,
यही है इसकी जीवन गाथा,
यह तो है जन–जन की भाषा।

एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक अपनी बात पहुंचाने का माध्यम हमारी भाषा ही है। भाषा में मानव को बांधने की अपूर्व शक्ति है। भाषा की इस शक्ति के संबंध में कहा गया है –''शब्देश्वाश्रिता शक्तिः विश्व स्यास्य निबंधिनी'' अर्थात् शब्द की शक्ति ही संपूर्ण विश्व को बांधने वाली है। भाषा का मूलाधार भाव संप्रेषण है। संप्रेषण से ही सभी सामाजिक कार्य निष्पादित किए जाते हैं। मानव सभ्यता के उदय के साथ ही अनेक भाषाओं का जन्म हो गया था हालांकि ऐसी कई भाषाएं रही हैं जो समय के साथ समाप्त हो गई हैं जबकि लगभग हजार वर्ष पुरानी हमारी हिंदी आज भी फल–फूल रही है। दरअसल भाषा वही जीवित रहती है जिसका प्रयोग जनता करती है। भारत में लोगों के बीच संवाद का सबसे बेहतर माध्यम हिंदी ही है और लगभग 1000 वर्षों से हिंदी हमारी सांस्कृतिक विरासत एवं साहित्य की भाषा के साथ–साथ जनता की संपर्क भाषा के रूप में भी प्रचलित रही है।

एक भाषा के रूप में हिंदी न केवल भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति और संस्कारों की वाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। अत्यंत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है, जिसे दुनिया भर में समझने–जानने और बोलने वाले बहुत बड़ी संख्या में हैं। यह हमारे पारंपरिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है जिसे हमारे भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अंतर्गत राजभाषा का

दर्जा दिया गया है। हमारे पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी ने कहा है ''हिंदी अनुवाद की नहीं बल्कि संवाद की भाषा है'' और आम आदमी के संवाद की भाषा के रूप में हिंदी देश की एकता का सूत्र है। विभिन्न भाषाओं के शब्दों को स्वयं में समाहित करके यह सही मायनों में संपर्क भाषा की भूमिका निभा रही है गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने इसके महत्व को बड़े सुंदर शब्दों में परिभाषित किया है – ''अन्य भाषाएं यदि नदियां हैं तो हिंदी महानदी है''।

हिंदी भारत की एकमात्र भाषा है जो लगभग 52% लोगों द्वारा बोली जाती है। इतना ही नहीं यह विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली तीसरी भाषा बन चुकी है। स्वयं हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी ने अमेरिका जाने पर मातृभाषा हिंदी में ही अपना भाषण दिया था जो हमारे लिए गर्व की बात है क्योंकि मातृभाषा देश की धरोहर होती है जिस प्रकार हम तिरंगे का सम्मान करते हैं ,वैसे ही हमारी भाषा भी सम्माननीय है। जब तक हम स्वयं इसे स्वीकार नहीं करते, दूसरों से इसकी अपेक्षा नहीं कर सकते। हिंदी शब्द है – हमारी आवाज का, हमारी बोली का जो हिंदुस्तान में बोली जाती है। एक बार मैंने कहीं पढ़ा था कि सोवियत रूस में नियुक्त भारतीय राजदूत विजयलक्ष्मी पंडित ने स्टालिन को अपना पहचान पत्र अंग्रेजी में भेजा। उन्होंने स्वीकार करने से इनकार करते हुए पूछा कि भारत की अपनी कोई भाषा है या नहीं ? फिर जब उन्होंने हिंदी में इसे भेजा सब स्टालिन ने मिलना स्वीकार किया। वास्तव में हिंदी भारत का मान है। कहा जाए तो हिंदी के बिना हिंदुस्तान की कल्पना भी नहीं की जा सकती। यह विडंबना है कि आज का युवा वर्ग यह तो मानता है कि हिंदी मातृभाषा है और उन्हें इसे बोलना चाहिए पर अच्छा कैरियर बनाने में अथवा बेहतर नौकरी पाने की चाह में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग उनकी मजबूरी बन गई है। यह माना कि अंग्रेजी एक अंतरराष्ट्रीय भाषा है, आज की जरूरत है पर क्या जरूरत के लिए अपनी नींव को छोड़ा जा सकता है? यदि हिंदी को अलग कर दिया जाए तो गांव और शहरों में बढ़ती खाई और गहरी होती जाएगी जो देश के विकास में एक बड़ी बाधा होगी। भाषा ही व्यक्ति को जोड़ती है, व्यक्ति के जुड़ने से परिवार और परिवार के जुड़ने से समाज का निर्माण होता है। समाज से गांव, गांव से शहर, शहरों से महानगर और महानगरों से देश। इस प्रकार देश के विकास में इस जुड़ाव का मजबूत होना आवश्यक है जो भाषा के माध्यम से ही हो सकता है और देश में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी ही है।

देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने में हिंदी का अहम योगदान है। हिंदी भाषा सिर्फ वार्तालाप और संचार का ही माध्यम नहीं है बल्कि यह देश में रोजगार के सृजन का भी माध्यम है। आज हिंदी सिनेमा से लेकर हिंदी पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और सोशल मीडिया पर हिंदी का ही बोलबाला है जोकि देश में लाखों रोजगार पैदा करते हैं। आज इंटरनेट पर भी करोड़ों लोग हिंदी का अनुसरण करते हैं इसलिए आज फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और गूगल प्लस भी जहां करोड़ों लोग हिंदी में अपने विचार साझा करते हैं अपना रूपांतरण हिंदी में भी कर चुके हैं क्योंकि उन्हें पता है कि अगर हिंदुस्तान में टिकना है तो हिंदी को बढ़ावा देना ही होगा।

हिंदी केवल हिंदुओं की भाषा नहीं है, वह तो देश के जन–जन का स्वर है। हिंदी के सूत्र के सहारे कोई भी व्यक्ति देश के एक कोने से दूसरे कोने तक जाकर अपना काम चला सकता है। देश में फैली अनेक भाषाओं और संस्कृतियों के बीच यदि भारतीय जीवन की उदात्तता और एकात्मकता किसी एक भाषा में दिखाई देती है तो वह हिंदी ही है। अपने उद्भव काल से ही हिंदी कई प्रदेशों की संपर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त होने लगी थी। मुगल शासन की राजभाषा बेशक फारसी थी पर शासकों के महलों में बोलचाल की भाषा हिंदी ही थी। डॉ रामविलास शर्मा जी के अनुसार "अकबर के महल में बोलचाल की भाषा हिंदी थी।" अपने जन्म से, प्रकृति से और अपनी आंतरिक शक्ति के सहारे भारत की सार्वजनिक भाषा के रूप में हिंदी विकसित और समृद्ध हुई है। विद्वानों की मान्यता है कि भारतीय जन संस्कृति को विकसित करने में हिंदी का अद्वितीय योगदान रहा है। हिंदी अखिल भारतीय संस्कृति, साहित्य, दर्शन, धर्म आदि की अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं बनी बल्कि वह भारतीयता की प्रतीक भी बन गई है।

राजस्थान में पिंगल, मध्यप्रदेश में ग्वालेरी, पंजाब में ब्रज पंजाबी मिश्रित पटियालवी, बंगाल–असम और उत्कल में ब्रजबूलि के रूप में हिंदी अलग–अलग स्वरूपों में फैली। इतना ही नहीं मीरा, नामदेव, नरसी मेहता, वल्लभाचार्य, संत ज्ञानेश्वर– इन सब की भाषा भी हिंदी ही रही है। हिंदी की स्वीकार्यता का पता इससे भी चलता है कि दूसरे प्रदेशों के विचारकों और नेताओं ने भी हिंदी में ही अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। आज दक्षिण के राज्यों में भी जो हिंदी का सफल लेखन, अध्यापन और पाठन हो रहा है, उसमें भी महात्मा गांधी द्वारा स्थापित ''दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा'' और ''राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, वर्धा'' जैसी अनेक संस्थाओं का अत्यधिक योगदान है।

इन तमाम विशेषताओं के बावजूद हमारे देश की युवा पीढ़ी पर हावी अंग्रेजी मानसिकता और हिंदी की तकनीकी कमियों को ध्यान में रखते हुए सरकार ने भी अनेक इस दिशा में उदाहरण के लिए सराहनीय प्रयास किए हैं:–

Learning Indian language with artificial intelligence (लीला) मोबाइल ऐप प्रयोग में लाया गया जिसके द्वारा देशभर में विभिन्न भाषाओं के माध्यम से जन सामान्य को हिंदी सीखने समझने तथा कार्य करने में सरलता होगी। हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए ''राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना'' तथा ''राजभाषा गौरव पुरस्कार'' आदि योजनाएं भी आरंभ की गई हैं। इसके साथ ही विदेश मंत्रालय द्वारा विश्व हिंदी सम्मेलन के माध्यम से हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने का कार्य भी आरंभ किया गया है। हिंदी में ज्ञान–विज्ञान की पुस्तकों के लेखन को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है। आज वैश्वीकरण के इस दौर में हिंदी विश्व स्तर पर प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। पूरी दुनिया में 175 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है, सोशल मीडिया और संचार माध्यमों में भी हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। जिस दिन पूरे भारत में एक भाषा के रूप में हिंदी का व्यवहार फोन आरंभ होगा , उस दिन भारतीय एकता और सुदृढ़ होगी क्योंकि हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो समस्त भारत को एकता के सूत्र में पिरो सकती है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने भी यह घोषणा की कि.... है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी–भरी,

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी।

अंत में हिंदी को राष्ट्रीयता का पर्याय मानते हुए हम कह सकते हैं कि यह हमारे राष्ट्रीय एकीकरण और राष्ट्रीय का मूल मंत्र है अतः हमें संविधान सम्मत सभी भाषाओं का सम्मान करते हुए राष्ट्रीय एकता और अखंडता को परिपुष्ट करने के लिए हिंदी का निरंतर संवर्धन और समर्थन करना होगा क्योंकि :–

''यही पूर्वजों का देती है,
तुमको ज्ञान – प्रसाद,
औ तुम्हारे भी भविष्य को देगी शुभ संवाद,
बनाओ इसे गले का हार,
करो अपनी भाषा से प्यार''

योगिता
(हाइड्रोकार्बन अन्वेषण लाइसेंसिंग नीति)

5 पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति

भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति है। इसे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी माना जाता है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ हर धर्म, जाति, विभिन्न संस्कृति और अलग–अलग विचाराधाराओं के लोगों का समावेश है और **अनेकता में एकता** ही इसकी मूल पहचान है। भारत का उत्तर–पूर्वी क्षेत्र इस देश का सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। समग्रता में पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति वह विशाल समुद्र है जिसके अतल में अनगिनत मोती यत्र–तत्र बिखरे हुए हैं।

पूर्वोत्तर भारतः

भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र असम, अरूणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, नागालैंड, त्रिपुरा, मिज़ोरम और सिक्किम – इन आठ राज्यों का समूह है। सात उत्तर–पूर्वी राज्यों को आमतौर पर एक दूसरे पर निर्भरता के कारण **'सात बहनों की भूमि'** के रूप में वर्णित किया जाता है क्योंकि ये सात राज्य असम, अरूणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, नागालैंड, त्रिपुरा और मिज़ोरम एक दूसरे के साथ सीमा साझा करते हैं। सिक्किम को भारत की सात बहनों में नहीं गिना जाता क्योंकि यह उनमें से किसी के साथ सीमा साझा नहीं करता है। हालांकि, इसे अनौपचारिक रूप से **सात बहनों का भाई** कहा जाता है। भाषा

की दृष्टि से यह क्षेत्र तिब्बती–बर्मी भाषाओं के अधिक प्रचलन के कारण अलग से पहचाना जाता है। अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, मिज़ोरम और नागालैंड मुख्य रूप से आदिवासियो की विविध जनजातियों द्वारा बसाया गया है। असम, मणिपुर, त्रिपुरा और सिक्किम में विभिन्न धर्म

और संप्रदाय जैसे हिंदू, ईसाई, मुस्लिम तथा स्थानीय जनजातियों और समुदायों के लोग रहते हैं।

पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति की विशेषताएँ:

पूर्वोत्तर के आठ राज्यों की भाषा, साहित्य एवं संस्कृति शेष भारत से अलग ही विशिष्ट इतिहास रखती है। यहाँ आस्ट्रिक आर्य, द्रविण और मंगोलियन जनगोष्ठी के लोग निवास करते हैं। इस क्षेत्र में लगभग 220 भाषाएं बोली जाती हैं। असमिया, नागा, मिज़ो, महार, मणिपुरी, तांगखुल, खासी, दफ़ला, चम्बा, बोडो, तिब्बती, लद्दाखी, लेव्या तथा आओ इत्यादि यहाँ की मुख्य भाषाएँ हैं। इस क्षेत्र में बसी हुई विविध जनजातियों की लोकसंस्कृति विविध वर्णीय और बहुआयामी है। खासी, गारो, जयंतिया जनजातियाँ अपनी विशिष्ट जीवन पद्धति और मूल्यों के कारण अनूठी हैं। इनकी लोक संस्कृति की विशेषताएं हैं – मौखिक परंपरा द्वारा हस्तांतरित लोक साहित्य, आदिम समाज की कलाएं तथा परंपरा में रचा–बसा नृत्य और संगीत। इन लोक जनजातियों की संस्कृति से ही वहां का स्थानीय साहित्य अपना वैभव पाता है।

असम के लोग ज्यादातर हाथ से बने बहुत साधारण कपड़े पहनते हैं। महिलाएं मेखला चादर या रिहा–मेखला पहनती हैं। पुरुष धोती–गमोसा पहनते हैं जो उनकी पारंपरिक पोशाक है। गमोसा असम में लगभग सभी सामाजिक–धार्मिक समारोहों का एक अनिवार्य हिस्सा है। यहाँ का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार बिहू है। यह एक वार्षिक चक्र में एक किसान के जीवन के महत्वपूर्ण बिंदुओं को चिह्नित करने के लिए मनाया जाता है। ओजापाली, देवदासी और सत्रिया असम की प्रमुख नृत्य शैलियाँ हैं। सत्रिया नृत्य एक प्रमुख भारतीय शास्त्रीय नृत्य है। यह एक नृत्य–नाटक प्रदर्शन कला है जिसकी उत्पत्ति असम के कृष्ण–केंद्रित वैष्णववाद मठों में हुई है।

अरुणाचल प्रदेश के पुरुषों की वेशभूषा अपने आप में ही अनूठी है– पारंपरिक जातीय पोशाकों में अपने सिरों पर बाँस या बेंत से बनी गोल टोपी, अनोखा केश विन्यास, प्राचीन मुनियों की तरह जुड़ा, जुड़े में लकड़ियों की आड़ी सींक और उसमें पक्षियों के रंग–बिरंगे पंख, गले में लटकती म्यानों में ठूंसी हुई तलवारें, सांस्कृतिक विशिष्टता को दर्शाती हैं। इस क्षेत्र के लोक नृत्य अरुणाचल प्रदेश में आदिवासी लोगों के जीवन के उत्साह और आनंद में एक महत्वपूर्ण तत्व है। इस क्षेत्र की अधिकांश जनजातियों में मुखौटा नृत्य की परंपरा विद्यमान है।

मणिपुर, जिसे प्यार से 'ए ज्वेल लैंड' कहा जाता है, वास्तव में पूर्वोत्तर भारत के छिपे हुए रत्नों में से एक है। मणिपुर में कुकी, नागा, पंगल और मिजो जैसी कई संस्कृतियों के लोग रहते हैं, जो कई भाषाएं बोलते हैं। मणिपुरी महिलाओं का पारंपरिक पहनावा फानेक और इन्नाफी है। पुरुष आमतौर पर सफेद कुर्ता और धोती पहनते हैं। यहाँ का सबसे लोकप्रिय उत्सव श्याओशंगश (होली) है, जो फाल्गुन की पूर्णिमा के दिन से शुरू होकर पांच दिनों तक मनाया जाता है। यहाँ के नृत्य अक्सर इतने मंत्रमुग्ध कर देने वाले होते हैं कि दर्शक इसकी सुंदरता, अनुग्रह और समन्वय से चकित रह जाते हैं। राज्य का विशिष्ट नृत्य रूप मणिपुरी नृत्य या जागोई है जिसे भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्यों में मान्यता प्राप्त है। यह नृत्य रास लीला के त्योहार के दौरान राधा कृष्ण के प्रेम को दर्शाता है। इस राज्य का एक अन्य लोकप्रिय नृत्य रूप पुंग चोलोम है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'ढोल की गर्जना' जो एक ढोल नृत्य है।

मेघालय में मुख्य रूप से तीन जनजातियां खासी, गारो और जयंतिया (पनार) निवास करती हैं, लेकिन इसके अलावा भी यहा की कुछ अन्य जनजातियां हजोग और तीवा हैं। यहाँ के लोगो के पहनावे में एक सादगी देखने को मिलती है जो इस राज्य की खूबसूरती को और अधिक बढ़ा देती हैं। मेघालय के लोगों के पास एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। इस राज्य के लोगों की संस्कृति की विशिष्ट विशेषताओं में से एक उनकी मातृवंशीय प्रणाली की परंपरा है जहां महिलाओं के माध्यम से वंश और विरासत का पता लगाया जाता है। नॉन्गरेम, लाहो, शाद सुक मिनसेइम, ड़ेरोगेटा आदि यहां के प्रमुख लोकप्रिय नृत्य हैं।

नागालैंड राज्य में कुल 16 जनजातियाँ निवास करती हैं। प्रत्येक जनजाति अपने विशिष्ट रीति–रिवाजों, भाषा और पोशाक के कारण दूसरी से भिन्न है। ये जनजातियां अपने पूर्वजों के वीरतापूर्ण कार्यों को दर्शाती कुछ लोककथाएं लेकर चलती हैं। उनके रीति–रिवाज और पहनावा पूर्वज वंश को यथोचित रूप से प्रदर्शित करते हैं। सभी जनजातियों के अपने–अपने त्योहार होते हैं जो उन्हें बहुत प्रिय होते हैं। इनमें एक सामान्य विशेषता यह है कि त्योहार कृषि के इर्द–गिर्द घूमते हैं, जो नागा अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है। नागालैंड के महत्वपूर्ण त्योहारों में – सेकरेन्यी, मोआत्सु, तोक्कू एमोंगा और तुलनी जैसे त्योहार शामिल हैं। इसके अलावा कुमीनागा, रेंगमनागा, लिम, चोंग, खैवा और युद्ध नृत्य भी नागालैंड की अलग अलग जनजातियों द्वारा मनाए जाते हैं।

नागालैंड का हॉर्नबिल उत्सव हर साल 1 से 10 दिसंबर तक मनाया जाने वाला एक वार्षिक उत्सव है। इस उत्सव की शुरुआत वर्ष 2000 में नागालैंड सरकार द्वारा अंतर जनजातीय संपर्क को प्रोत्साहित करने और राज्य की सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने के लिए की गई थी।

त्रिपुरा की संस्कृति काफी समृद्ध है, इस राज्य में लगभग 19 जनजातियां हैं और अभी भी जंगलों में रहना पसंद करती हैं। यहां की संस्कृति में कई लोककथाएं, पौराणिक कथाएं, गीत, कहानियां और पहेलियां हैं। ये सभी कथाएं रोजमर्रा के अनुभवों के आधार पर बनाई गई हैं, जिसमें देवी, देवता, दानव, डायन, इतिहास, वनस्पति, पशु, आकाशगंगा सभी का वर्णन देखने को मिलता है। रीसा, रिग्नाई और रिकुतु त्रिपुरा की पारंपरिक वेशभूषा है, जिसमें कपड़े में जीवंत कलात्मकता है। दुर्गा पूजा, नवरात्रि, विजयदशमी, डोल जात्रा (होली), पौस संक्रांति, अशोकाष्टमी और दिवाली जैसे त्योहार यहाँ सबसे अधिक मनाए जाने वाले त्योहार हैं। राज्य के दो प्रमुख वार्षिक त्योहार गड़िया (अप्रैल) और कास (जून या जुलाई) हैं, जिसमें जानवरों की बलि दी जाती है। संगीत और नृत्य यहाँ की संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग हैं। यहां सुमुई नामक यंत्र का प्रयोग किया जाता है, जो बांसुरी जैसा दिखता है। यहां के लोग खाम का प्रयोग करते हैं जिसे ढोल भी कहा जाता है। यहां के लोक नृत्यों में गरिया, मसाक, सुमनी, झूम और लेबांग बूमानी प्रसिद्ध हैं।

मिज़ोरम अपनी संस्कृति और परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ रहने वाली जनजातियां साल भर रंगीन सांस्कृतिक उत्सव मनाती हैं, जिसके कारण मिजोरम को सदाबहार राज्यों में से एक माना जाता है। यहाँ के निवासी पारंपरिक और सरल लोग हैं जो आज भी प्रौद्योगिकी मुक्त नियमों का पालन करते हैं। इस राज्य में जाति और लिंग के आधार पर कोई असमानता नहीं है। मिज़ो के मूल परिधान को पुआन (पुवान) के रूप में जाना जाता है, जिसे पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा लगभग एक ही फैशन में इस्तेमाल किया जाता है। यहां रहने वाली जनजातियों के अपने–अपने त्योहार हैं। इनमें कुछ प्रमुख त्योहार चापचर कुट, मीम कुट और पाल कूट हैं। विविध मिजोरम नृत्य मिज़ो की उल्लासपूर्ण भावना को दर्शाते हुए रमणीय और दिलचस्प हैं। इनमें से अधिकांश नृत्य त्योहारों के दौरान किए जाने वाले समूह नृत्य होते हैं।

सिक्किम कई जनजातियों और एक साथ रहने वाले लोगों की एक खूबसूरत भूमि है। इन सभी विविध जनजातियों और समुदायों में उनके विशेष नृत्य रूपों, त्योहारों, भाषाओं, संस्कृति और शिल्प रूपों के अलावा अपनी अनूठी विशेषताएं हैं। यहाँ के लोगों के पास एक समृद्ध संस्कृति है जो विभिन्न धर्मों, रीति–रिवाजों और विभिन्न समुदायों की परंपराओं का सजातीय मिश्रण है। यहाँ भूटिया, नेपाली और लेप्चा समुदाय के लोग निवास करते है, इस कारण यहाँ की संस्कृति में इनका सम्मिश्रण देखने को मिलता है। यहाँ के भूटिया समुदाय के लोगो की पारम्परिक वेशभूषा खो है जिसे बाखु के नाम से भी जानते है। सिक्किम में बेस नेपाली लोगो की वेशभूषा का भी समावेश दिखाई पड़ता है। यहाँ के लेप्चा समुदाय के पुरुषो की वेशभूषा को थोकोरो–दम के नाम से जाना जाता है। लोक गीत और नृत्य सिक्किम की संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। अधिकांश आदिवासी नृत्य फसल के मौसम का चित्रण करते हैं और उन्हें समृद्धि के लिए किया जाता है। सिक्किम के नृत्य पारंपरिक वाद्ययंत्रों के साथ होते हैं, जप करते हैं, और नर्तकियां चमकीली वेशभूषा और पारंपरिक मुखौटे पहनती हैं। कुछ सबसे प्रसिद्ध नृत्य रूप हैं रेचुंग्मा, गाह टू किटो, ची रम्मू, बी यू मिस्टा, ताशी जलधा, एनची चाम, लू खंगथामो, गुनुंगमाला ज्ञानुघे और काग्येद नृत्य।

पूर्वोत्तर भारत में प्राकृतिक संपदा तथा सांस्कृतिक वैभव का असीम भंडार है। यहाँ विभिन्न कुलों की अनगिनत भाषाएँ, अनगिनत लोग तथा अनगिनत संस्कृतियाँ ऐसा बहुरंगी वितान रचती हैं कि देखने समझने वाला मोहित होकर रह जाता है। यहाँ के आठ राज्यों की संस्कृति के निर्माण में यहाँ की वैभव सम्पन्न प्राकृतिक सम्पदा और मनोरम सौंदर्य की बड़ी भूमिका है। नदियों, पहाड़ों, झरनों से भरा यह प्रदेश प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक की नवीनतम संस्कृतियों को अपने में समेटे हुए है। दूर–दूर तक फैली चाय बागानों की खूबसूरत हरियाली, रंग बिरंगे परिधान, गैंडे, बारहसिंगे हिरणों का झुंड, बौद्ध मठो के घंटों की पवित्र ध्वनियाँ इत्यादि विशेषताओं का संगम स्थल है भारत का उत्तर–पूर्वी क्षेत्र।

#sources: tripuraonline.in, gosikkim.in, indianeagle.com, sikkimtourism.com, news.jugaadin.com, assamtopix.com, holidify.com, utsavpedia.com, megartsculture.gov.in, sentinelassam.com, hindi.thepointout.com

प्रशांक चंद्रा
(मानव संसाधन एवं प्रशासन)

6 ग़ज़ल

हर इक दिल में गरज कोई निहाँ है,
जो अपना है वो भी अपना कहाँ है ?

करेगा क्या वो मेरी तर्जुमानी,
हक़ीकत में जो ख़ुद ही बेज़ुबाँ है.

मुझी में जी रहा है मेरा माज़ी,
जिसे गुजरा कहें, गुजरा कहाँ है.

मेरे अलफ़ाज़ पर ही ध्यान मत दो,
उसे भी देख लो जो दरमियाँ है.

बजुज तेरे नहीं अब कोई मेरा,
मेरे सर पे तेरा ही सायबाँ है.

कुछ नहीं से सब बना कैसे ?
इक ख़ला में था ख़ुदा कैसे ?

रात–दिन, ये चाँद सूरज सब,
उगते–ढलते हैं भला कैसे ?

ग़र धमाके से है जन्मीं तो,
होगी ये दुनिया फ़ना कैसे ?

बस तसव्वुर तो नहीं है तू,
तुझको पाऊँ मैं बता कैसे ?

कोई हल है इन सवालों का ?
ख़त्म कब होगा, ये क्या, कैसे ?

कुमार प्रभाकर
(सीबीएमएस)

7 मन का संघर्ष

सीताहरण के पश्चात् श्रीराम विचलित हो उठे थे। लंका–पति रावण के साथ सम्भवतः ये आख़िरी दिन की लड़ाई थी और विजय तो निश्चित ही थी। पर श्रीराम थोड़ी सोच में थे, और अपने सहकर्मियों के साथ लगातार मंत्रणा कर रहे थे। निरंतर खुद को और अपनी सेना का उत्साह–वर्धन कर रहे थे। थे तो वो स्वयं भगवान, परंतु मनुष्य रूप में इस धरा पर अवतरित हुए थे। उनका आचरण मनुष्य रूपी होना स्वाभाविक ही था।
हमारे जीवन काल में भी ऐसी स्तिथि आती है जब हम अधीर हो उठते हैं। लक्ष्य सामने होते हुए भी असमंजस की स्थिति रहती है। हमें अपने सामर्थ पर शंका होती है। बिना घबराए हमें आगे बढ़ते रहना चाहिए। श्रीराम की वस्तुस्थिति से प्रेरित संदर्भ से कुछ पंक्तियां समर्पित हैं:

हे मन ! तू चिंचित न हो,
हे मन ! तू विचलित न हो,
गहरे बादल छँट जायेंगे,
संकट साथ ले जायेंगे ।।
वियोग प्रेम का मन में है,
बिछोह प्रिय का हिय में है,
पर, ना समझ इनको तू कमजोरी,
इनको तू अपनी ढाल बना,
उठ तू अब पश्चाताप न कर,
विलाप को तू सामर्थ बना,
हे मन ! तू अक्षम न हो ।।
जीवन में कुछ क्षण आते हैं,
परीक्षा विकट ले जाते हैं,
पर जीता वही जो टिका रहा,
सुध–बुध संग लिए खड़ा रहा,

हे मन ! तू विह्वल ना हो,
हे मन ! तू भयभीत ना हो ।।
संकल्प याद कर पुरखो का,
संघर्ष याद कर वीरों का,
प्रतिज्ञा सबने निभायी है,
मन में दृढ़ता जब लायी है,
तेरा दुःख तो कुछ क्षण का है,
हे मन ! तू अधीर न हो ।।
ध्येय नही हो जब भी निश्चित
होती व्याकुलता मन में है,
लक्ष्य तो निश्चित पाना है,
पर पहले खुद को पात्र बनाना है,
होगी पक्की विजय जब तू,
मन को पहले विजयी बनायेगा,
हे मन ! तू आतुर ना हो ।।

अजय कुमार शर्मा
(हाइड्रोकार्बन अन्वेषण
लाइसेंसिंग नीति)

8 घृणा तो केवल खाक लिखती है

वो शराफत से क्या जिए,
कुछ लोग तो बेकाबू हो गए।
मत खेलो इस शराफत से,
ताप इसका जला कर खाक कर देगा।
कलम जब चली तुम्हारी,
कहानी उनकी लिखने को।
मदहोश इतने थे तुम अपने में,
कहानी अपनी बयां कर दी।
तनिक ठहरते चन्द लब्जों से,
समझाते हैं बहकते अंतर्मन को।
प्रसन्न चित्त हृदय, धैर्य एवं क्षमा भाव,
रखता है मोहब्बत के नजदीक अंतर्मन को।
गुजारिश है वंदना है,
सम्भालो अंतर्मन के कदमों को।
मोहब्बत है तो जीवन है,
घृणा तो केवल खाक लिखती है।

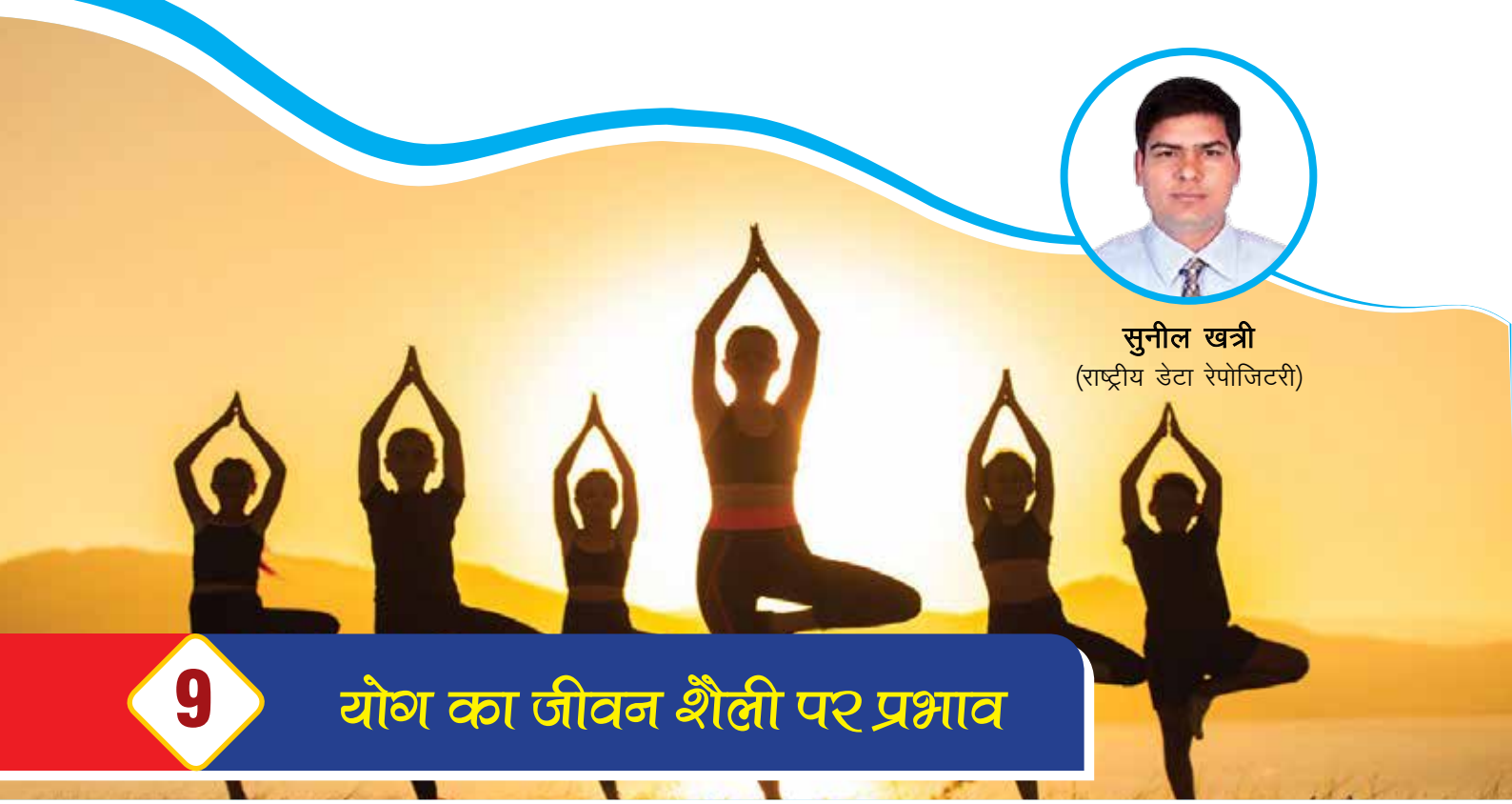

सुनील खत्री
(राष्ट्रीय डेटा रेपोजिटरी)

9 योग का जीवन शैली पर प्रभाव

"नास्ति मायासमं पापं,
नास्ति योगात्परं बलम्"

माया के समान दुनिया में कोई पाप नहीं और योग के समान दुनिया में कोई शक्ति नहीं है। अर्थात योग की शक्ति के माध्यम से लौकिक तथा अलौकिक पदार्थोंको प्राप्त किया जा सकता है। योग का अर्थ है जोड़ना जिसका तात्पर्य है:

- स्थूल से सूक्ष्म को जोड़ना,
- व्यक्त से अव्यक्त को जोड़ना,
- व्यक्तित्व चेतना से ब्रह्मांडीय चेतना को जोड़ना,
- जीवन में योग्य से सुयोग्य हो जाना योग है, आदि

योग की विभिन्न विधाओं के निरंतर अभ्यास से शरीर, मन, चेतना को अंगीकार कर जीवन के चरम लक्षयों को प्राप्त कर सकते हैं। वर्तमान समय भौतिक युग का कालखंड है जिसने मनुष्य को अपने आगोश में समाहित कर लिया है। जिससे वो अपने दैनिक कृतव्य और मानव मूल्यों को भूल रहा है। इसी कर्म में हम अपने जीवन शैली को भी भूल रहे हैं। अतः योग ही एक मार्ग है जो इन सभी को व्यवस्थित कर सकता है।

योग द्वारा जीवन शैली पर प्रभाव को जानने से पूर्व जीवन क्या है उसे समझना आवयशक है। जीवन का अर्थ है प्राण धारण या जीवित दशा, अर्थात् जिसमें प्राण या गमन है वही जीवन है या जीवित है। इसिलए कहा गया है कि "प्राणवा श्रेष्ठस्य जेष्ठस्य" अर्थात चराचर जगत में प्राण श्रेष्ठ भी है और जेष्ठ भी है। बिना प्राण के जीवन की कल्पना करना आकाश कुसुम की भांति है।

''चरेवेति – चरेवेति'' : किसी भी दशा में चलते रहना ही जीवन है। वही सामान्य शब्द में कहे कि जन्म से लेकर मृत्यु तक के कालखंड को जीवन कहते हैं। जीवन की उपरोक्त अवधारणा के उपरांत इस अमूल्य जीवन को जीने व आखिरकार मानव जीवन के रहस्य अर्थात आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त करने की विधा का ही दूसरा नाम योग है।

मनुष्य के सर्वांगीण विकास को प्राप्त करने में योग सर्वथा सहायक है योग के मूल्यों को अपने दैनिक जीवन में बिना किसी बाहरी दबाव के अंगीकार करने की प्रक्रिया में जो सफल है वो ही सच्चा योगी व समाज के लिए अनुकरणीय उदहारण प्रस्तुत कर सकता है।

विगत कुछ वर्षो में घटित अप्रत्याशित कारणों से सम्पूर्ण विश्व का ध्यान एक बार फिर से स्वस्थ शरीर व् विकसित मस्तिष्क की और आकृष्ट हुआ है जहाँ कोरोना की बीमारी ने मानवता के लिए कठोर चुनौतीयां प्रस्तुत

की है वही सत्य को जानने की उत्कंठा में योग के सिद्धांतो के पालन करने हेतु भी सम्पूर्ण विश्व का ध्यान आकृष्ट हुआ है।

वस्तुतः यही वो सार्वभौमिक कारक है जिसके परिणामस्वरूप आज भारत की विषम परिस्थितियों में करोड़ो मानवों द्वारा अपनाए गए उद्धरणों से विश्व विस्मृत है। वर्तमान परिपेक्ष्य में हर विधा में संलग्न व्यक्ति यदि योग के आदर्शों को अपनी दैनिक दिनचर्या में सम्मिलित करे तो निश्चित रूप से न केवल वह अपना विकास व उत्थान करेगा बल्कि समस्त मानवता के लिए अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति में किये जा रहे हवन में अपनी आहुति भी प्रदान करेगा।

"ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्।"

पूरन सिंह मेहरा
(वित्त एवं समन्वय)

10 रम्माण उत्सव - विश्व सांस्कृतिक धरोहर

रम्माण उत्सव उत्तराखण्ड के चमोली जनपद के सलूड़ गांव में प्रतिवर्ष अप्रैल (बैसाख) महीने में आयोजित होता है। रम्माण उत्सव सलूड़ गांव की 500 वर्ष पुरानी परंपरा है, जिसे 2009 में यूनेस्को ने विश्व धरोहर की सूची में शामिल किया है स रामायण से जुड़े प्रसंगों के कारण इसे 'रम्माण' उत्सव कहते है, रामायण को स्थानीय गढ़वाली भाषा में 'रम्माण' बोला जाता है स 'रम्माण' उत्तराखण्ड की एक लोक सांस्कृतिक कला है। जो अब विलुप्त होती जा रही है। रम्माण उत्सव वर्ष 2007 तक सलूड़ गांव तक ही सीमित था, लेकिन गांव के एक शिक्षक डॉ. कुशल सिंह भंडारी जी के अथक प्रयास से रम्माण को विश्व की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर का स्थान मिला।

रम्माण का प्रादुर्भाव

मान्यता है कि जब मध्यकाल में सनातन धर्म का प्रभाव कम हो रहा था, तब आदिगुरू शंकराचार्य जी ने सनातन धर्म में नई जान फूकने के लिए पूरे देश में चार मठों की स्थापना की। मंदिरों तथा तीर्थों की स्थापना की। जोशीमठ के आसपास शंकराचार्य के आदेश पर उनके शिष्यों ने, हिन्दू जागरण के लिये गांव–गांव जाकर पौराणिक मुखौटों से नृत्य करके लोगों में जन–चेतना जगाने का प्रयास किया। जो धीरे–धीरे इन क्षेत्रों में समाज का अभिन्न अंग बन गया।

रम्माण उत्सव में राम से जुड़े प्रसंगों का लोकशैली में प्रस्तुतीकरण किया जाता है। इसका आयोजन सलूड़–डुंग्रा की संयुक्त पंचायत करती है। रम्माण कौथिक (मेला) कभी 11 दिनों या कभी 13 दिनों तक मनाया जाता है। रम्माण में राम, लक्ष्मण, सीता और हनुमान के पात्रों द्वारा लोकनृत्य शैली में कुछ चुनिंदा प्रसंगों को प्रस्तुत किया जाता है। यह विविध कार्यक्रमों पूजा और अनुष्ठानों की एक श्रृंखला है। इसमें सामूहिक पूजा, देवयात्रा, लोकनाट्य, नृत्य, गायन, मेला आदि के आयोजन होते है। यद भूम्याल देवता की वार्षिक पूजा का अवसर भी होता है।

नृत्य शैली

रम्माण उत्सव मे मुखौटा नृत्य शैली का उपयोग किया जाता हैं। इसमें नर्तक अपने मुख पर मुखौटा पहनता है। बिना संवादों के मुखौटों, ढोल, दमाऊ, भोंकारों और मजीरों आदि से रम्माण नृत्य का आयोजन होता है। इसमें दो प्रकार के मुखौटों का प्रयोग होता है। पहले वाले को बोलते है द्यो पत्तर अर्थात् देवताओं के मुखौटे। दूसरे होते

है ख्यलारी पत्तर अर्थात् मनोरंजन वाले मुखौटे। विभिन्न चरित्र और उनके लकड़ी के मुखौटों कों पत्तर कहते हैं। पत्तर शहतूत (केमू) की लकड़ी पर कलात्मक तरीके से उत्कीर्ण किये जाते हैं।

रम्माण के विशेष नृत्य

'बण्यादृबण्याण' (बनिया और उसकी पत्नी):– यह नृत्य तिब्बत के व्यापारियों पर आधारित है, जिसमे उन पर हुए चोरी व लूटपाट की घटना का विवरण नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत करते है।

'मौर–मौरयाण' (पशुपालक और उसकी पत्नी):– यह नृत्य पहाड़ों में होने वाली दैनिक परेशानियों जैसे– पहाड़ों में लकड़ी और घास काटने के लिये जाते समय जंगली जानवरों द्वारा किये जाने वाले आक्रमण का चित्रण होता है।

'माल–मल्ल'– इस नृत्य में स्थानीय लोगों व गोरखाओं के बीच हुए युद्ध का वर्णन होता है।

'कुरु–जोगी (मसखरा)'– यह एक प्रकार का हास्य नृत्य है। रम्माण का हास्य पात्र अपने पूरे शरीर पर चिपकने वाली विशेष प्रकार की घास (कुरु) लगाकर लोगों के बीच चला जाता है। कुरु चिपकने के भय से लोग इधर–उधर भागते हैं, लेकिन कुरु जोगी उन पर अपने शरीर पर चिपके कुरु को निकालकर फेंकता है। इस प्रकार यह जोकर लोगों को हँसाने और मनोरंजन करने का कार्य करता है।

सलूड–डुंग्रा से विश्व धरोहर तक का सफर

वर्ष 2008 में इंदिरा गाँधी नेशनल सेंटर फॉर आर्टस ने दिल्ली में 'रामायण अंकन मंचन और वाचन' विषय पर एक सम्मेलन आयोजित किया। इसमें रम्माण को भी शामिल होने का अवसर मिला और इसकी प्रस्तुति की काफी सराहना की गई। इसके बाद इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर आर्ट्स ने सलूड़ गाँव जाकर संपूर्ण रम्माण उत्सव का अभिलेखीकरण किया और सभी आवश्यक दस्तावेजों के साथ विश्व धरोहर घोषित करने का प्रस्ताव यूनेस्को को भेजा गया। 2 अक्टूबर 2009 को यूनेस्को ने आबूधाबी में हुई बैठक में इस उत्सव को विश्व की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर घोषित किया। इस सफलता का श्रेय गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्रोफेसर दाताराम पुरोहित, छायाकार अरविंद मुदगिल, रम्माण लोक जागर गायक थान सिंह नेगी व डॉ कुशल सिंह भंडारी जिन्होंने रम्माण को लिपिबद्ध कर इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया, को जाता है। हर वर्ष आयोजित होने वाले रम्माण का शुभ मुहूर्त बैसाखी पर निकाला जाता है। रम्माण की झांकी दिल्ली में गणतंत्र दिवस परेड में वर्ष 2016 में प्रदर्शित की जा चुकी है।

11 शेयर बाजार

राकेश जैन
(मानव संसाधन एवं प्रशासन)

शेयर बाजार का मतलब होता है, हिस्सा बाजार, वह जगह जहां आप शेयरों की खरीद–बिक्री कर सकते हैं। शेयर बाजार में सूचीबद्ध कंपनी की हिस्सेदारी खरीदने बेचने की जगह है, शेयर बाजार में निवेश अपने धन को विकसित करने का एक लोकप्रिय तरीका है, सही मार्गदर्शन के साथ आप अधिक से अधिक लाभ कमा सकते हैं। शेयर बाजार में निवेश केवल मुनाफा बनाने के बारे में नहीं है, आपके पास सही स्टॉक चुनने की समझ होनी चाहिए।

आप शेयर बाजार में निवेश कर रहे हो तो सचेत निर्णय लें, आप उतना ही पैसा डालें जिसका खोना आप बर्दाश्त कर सकें और अपनी जिंदगी भर की कमाई दाव पर ना लगाएं, शेयर बाजार में निवेश करते समय सावधानी बरतें तथा आगे बढ़े।

शेयर बाजार के बारे में सीखना बहुत चुनौतीपूर्ण हो सकता है दुनिया के दिग्गज निवेशक 'वारेन वफेट' का कहना है "जब दूसरे लालची हो जांए तो डरने की जरूरत है, वहीं जब दूसरे डर रहे हों तब आप लालची बन जांए", शेयर बाजार में भारी उतार–चढ़ाव के चलते निवेशक अपनी कमाई को डुबो देते हैं।

शेयर बाजार में निवेश की शुरुआत

आपको सबसे पहले किसी ब्रोकर की मदद से डीमेट अकाउंट खुलवाना होगा तभी आप शेयर बाजार से शेयर खरीद–बेंच सकते हैं, शेयर धारक को कंपनी प्रत्येक तिमाही, छमाही, सालाना आधार पर कंपनी मुनाफा कमाने पर हिस्साधारकों को लाभांश देती है, कंपनी की गतिविधियों की जानकारी सेबी (SEBI), और बीएससी (BSE) एनएससी (NSE) की वेबसाइट पर उपलब्ध होती है। जब तक आपको शेयर बाजार की अच्छी जानकारी ना हो, आप शेयर बाजार से पैसा नही कमा सकते।

शेयर बाजार में सन् 1985 में राकेश झुनझुनवाला ने अपनी पॉकेट मनी से 5000 रु. से शेयर बाजार में शुरुआत की थी, आज देश भर के लाखों निवेशक उनको फॉलो करते हैं, आज उनकी गिनती देश के जाने–माने अरबपति अमीरों में की जाती है। अगर आप शेयर बाजार में निवेश की योजना बना रहे हैं तो आप अपना सरप्लस पैसा ही निवेश करें, कभी भी लोन या कर्ज लेकर निवेश ना करें।

शेयर बाजार के बारे में कुछ जानकारी होनी चाहिए

1. शुरुआत समझदारी से होनी चाहिए
2. कभी भी एक ही सेक्टर में निवेश ना करें
3. हमेशा अपडेट रहें
4. भविष्य को देखकर ही निवेश करें
5. कम दाम के शेयर खरीदना
6. अफवाहों से बचें

शेयरों में उतार–चढ़ाव क्यों आता है?

किसी कंपनी के कामकाज ऑर्डर मिलने या छिन जाने, नतीजे बेहतर रहने, मुनाफा बढ़ने–घटने जैसी जानकारी के आधार पर उस कंपनी का मूल्यांकन होता है। लिस्टेड कंपनी रोज कारोबार करती है और उसकी स्थितियों में रोज कुछ ना कुछ बदलाव होता रहता है, इस मूल्यांकन के आधार पर मांग–घटने बढ़ने पर शेयरों की कीमतों में उतार–चढ़ाव होता है, अगर कोई कंपनी लिस्टिंग समझौते से जुड़ी शर्त का पालन नहीं करती तो उसे सेबी (SEBI), और बीएससी (BSE)–एनएससी (NSE) से डिलीट कर देती है।

नीलम सचान
(भूविज्ञान और भूभौतिकी)

12 संगति का असर

बचपन में माता पिता इस बात पर बहुत अधिक जोर देते थे कि हमारे दोस्त कौन हैं और कैसे हैं। दरअसल उन्हें हमारी अच्छी बुरी संगत की चिंता सताती थी। कहते हैं आप जिस शख्स के साथ रहते हैं उसके जैसे ही हो जाते हैं। संगत का कितना अधिक असर पड़ता है इस बात को एक कहानी से समझते हैं।

एक समय की बात है। एक बार एक राजा शिकार करने जंगल गया था। हालांकि उसे काफी देर तक कोई शिकार नहीं मिला। फिर रात हो गई और घनघोर अंधेरा होने के चलते वह जंगल में रास्ता भटक गया। इस दौरान उसे डाकुओं का एक अड्डा दिखाई पड़ा।

खतरे को भांपते हुए बहुत ही धीरे–धीरे और चुपचाप उनके अड्डे के पास से गुजरा। लेकिन वहां पेड़ पर बैठे तोते ने उन्हें देख लिया। तोता चिल्लाते हुए बोला "पकड़ो–पकड़ो। एक राजा आ रहा है। इसके पास बहुत सारा सामान है, लूटो, जल्दी आओ–जल्दी आओ।"

तोते की आवाज सुनते ही डाकू अड्डे से बाहर आए और राजा के पीछे पड़ गए। राजा जैसे तैसे वहां से जान बचाकर भागा। कुछ देर बाद थककर वह एक पेड़ के पास सुस्ताने लगा। इस पेड़ पर भी एक तोता बैठा था। वह राजा को देखते ही बोला "आओ राजन, हमारे साधु महात्मा की कुटी में आपका स्वागत है। अन्दर आइये पानी पीजिये और विश्राम कर लीजिये।"

तोते के यह बोल सुन राजा दंग रह गया। वह सोचने लगा कि एक ही जाति के होने के बावजूद दोनों तोतों की वाणी में कितना अंतर है। फिर जब वह साधु से मिला तो उसने उसे पूरी कहानी सुनाई, साथ ही पूछा कि दोनों तोतों के व्यवहार में इतना अंतर कैसे है?

इस पर साधु ने कहा कि "हे राजन, ये सब बस संगति का असर है। डाकुओं के साथ रहकर तोता भी डाकुओं की तरह व्यवहार करने लगा। वह भी उनकी भाषा बोलना सीख गया। वहीं मेरा तोता मेरे साथ रहा तो मेरी जैसी आदतें सीख गया। यह सब वातावरण पर निर्भर करता है। मूर्ख भी विद्वानों संगत में विद्वान बन सकता है, वहीं विद्वान यदि मूर्खों के साथ रहे तो वह भी मूर्ख बन जाता है"

कहानी की सीख

इस कहानी से यह सीख मिलती है कि हमेशा अच्छे दोस्त बनाए। अच्छी संगत में रहने पर आपके अंदर भी अच्छी आदतें आएंगी। हम जिस तरह के लोगों के साथ रहते हैं हमारे अंदर वैसे ही गुण–अवगुण जाने अनजाने आ जाते हैं।

लक्ष्मण सिंह
(भूभौतिकीय सर्वेक्षण विभाग)

13 उल्टी यात्रा

2022 से 1970 के दशक अर्थात् बचपन की तरफ जो 50 वर्ष कि उम्र को पार कर गए हैं या उसके करीब है, उनके लिए यह यात्रा खास है:–

मेरा मानना है कि दुनिया में जितना बदलाव हमारी पीढ़ी ने देखा है, हमारे बाद की किसी भी पीढ़ी को "शायद ही" इतने बदलाव देख पाना संभव हो। हम वह आखिरी पीढ़ी हैं जिन्होंने बैलगाड़ी से लेकर सुपर–सोनिक जेट देखे हैं। बैरन खत से लेकर लाइव चैटिंग तक देखा है और वर्चुअल मीटिंग जैसी असंभव लगने वाली बहुत सी बातों को संभव होते हुए देखा है। हम वह पीढ़ी हैं जिसने कई–कई बार मिट्टी के घरों में बैठकर परियों एवं राजाओं की कहानियां सुनी है, जमीन पर बैठकर खाना खाया है और प्लेट में डाल–डाल कर चाय भी पी है।

हम वह लोग हैं जिन्होंने बचपन में अपने मोहल्ले के मैदान में अपने दोस्तों के साथ परंपरागत खेल, गिल्ली डंडा, लुका – छिपी, खो – खो, कबड्डी और कंचे जैसे खेल खेले हैं।

हम उसी पीढ़ी के लोग हैं, जिन्होंने अपनों के लिए अपने जज़्बात खतों में आदान–प्रदान किए हैं और उन खतों के पहुंचने और जवाब के वापस आने में महीनों तक इंतजार किया है।

हम उसी आखिरी पीढ़ी के लोग हैं, जो अक्सर अपने छोटे बालों में सरसों का ज्यादा तेल लगाकर स्कूल और शादियों में जाया करते थे।

हम वह आखिरी पीढ़ी के लोग हैं, जिन्होंने चांदनी रात में डिबरी, लालटेन या बल्ब की पीली रोशनी में होमवर्क किया है और दिन के उजाले में चादर के अंदर छुप कर नॉवेल पढ़े हैं।

हम उसी आखिरी पीढ़ी के लोग हैं, जिन्होंने कुलर–एसी और हीटर के बिना ही अपना बचपन गुजारा है। हम वही लोग हैं जिन्होंने स्याही वाली दवात और कलम से कॉपी, किताबें, अपने कपड़े और हाथ नीले–काले किए हैं।

हम उसी आखरी पीढ़ी के लोग हैं, जिन्होंने अपने टीचर से मार खाई है और घर आकर शिकायत करने पर फिर से मार खाई है। हम वही लोग हैं जिन्होंने गांव–घर के बुजुर्गों को देखकर नुक्कड़ से भागकर अपने घर आ जाया करते थे। हम वही आखिरी पीढ़ी के लोग हैं, जिन्होंने अपने स्कूल के सफेद कैनवास शूज पर खड़िया (चाक) का सफेद पेस्ट लगाकार चमकाया करते थे।

हम उसी आखिरी पीढ़ी के लोग हैं, जिन्होंने काफी समय तक सुबह काला या लाल दंत मंजन या सफेद टूथ

पाउडर इस्तेमाल किया है और कभी–कभी तो नमक या कोयले से ही अपने दांत साफ किए हैं, तथा गुड़ की चाय भी पी है। हम निश्चित ही वह लोग हैं जिन्होंने चांदनी रात में रेडियो पर बीबीसी (BBC) की खबरें, विविध–भारती, ऑल इंडिया रेडियो, बिनाका गीत–माला और हवा महल जैसे प्रोग्राम पूरी शिद्दत से सुने हैं।

हम वही आखिरी पीढ़ी के लोग हैं, जिन्होंने शाम होते ही अपनी–अपनी छतों पर गर्मी के दिनों में पानी का छिड़काव किया करते थे और उसके बाद मोटी सी चादर बिछाकर सोया करते थे और एक ही स्टैंडिंग पंखा (Stand Fan) घर के सभी लोगों को हवा के लिए हुआ करता था तथा सुबह – सुबह सूरज निकलने के बाद भी ढीठ बने सोते रहते थे। अब वह सब दौर बीत गया है, चादरें अब नहीं बिछा करती, डब्बा जैसे कमरों में कूलर और एसी के सामने राते बिता करती हैं। अब तो लोग जितना पढ़–लिख रहे हैं, उतना ही खुदगर्ज, बेमुरवती, अकेलेपन और निराशा में खोते जा रहे हैं, और हम वह खुशनसीब लोग हैं जिन्होंने रिश्तों की मिठास महसूस की है।

आज के इस "कोरोना" काल में पारिवारिक, रिश्तेदारों (पति–पत्नी, बाप–बेटा, भाई–बहन आदि....) को भी एक दूसरे को छूने से डरने लगे हैं, दूसरे को छूने की क्या बात करें अब तो आदमी (लोग) खुद अपने ही हाथ से अपने ही मुंह और नाक को छूने से डरने लगे हैं। अब तो अर्थी को बिना चार कंधों के श्मशान घाट पर जाते हुए देखा है और पार्थिव शरीर को दूर से ही अग्नि–दाग लगाते हुए देखा है।

हम आज के भारत की एक मात्र पीढ़ी हैं जिन्होंने, अपने मां–बाप की बात मानी है और अपने बच्चों की भी बात मान रहे हैं। आजकल शादी समारोह में (Buffet) खाने में वह आनंद नहीं आता जो कि पहले के दिनों में पंगत में बैठकर खाने में आता था। जैसेः– सब्जी देने (परोसने) वाले को गाइड करना, उंगलियों के इशारों से दो–दो लड्डू और गुलाब जामुन लेना, गरम–गरम पूरी छांट–छांट कर लेना और पीछे वाली पंगत में झांक कर देखना कि क्या–क्या आ गया और अपने तरफ अभी क्या आना बाकी है, उसके लिए आवाज लगाना, पास वाले के पत्तल में जबरदस्ती पूरी डलवाना, रायता–खीर वाले को दूर से आते देख अपना दोना साफ कर देना और पानी वाले को जोर जोर से आवाज लगाना।

एक बात बोलूं इंकार मत करना जो भी इसको पढ़ेगा, उसको–उसको अपना बचपन एक बार जरूर याद आ जाएगा और कुछ क्षणों के लिए ही सही, वह अपने बचपन कि यादों में चला जाएगा।

जानकी मेहरा
(पत्नी, श्री पूरन सिंह मेहरा)

14 सर्वे भवन्तु सुखिनः

मैं स्वयं सुखी रहूँ, मेरा परिवार सुखी हो, पड़ोसी सुखी हो, बस्ती सुखी हो, प्रांत सुखी हो, देश सुखी हो तथा सारा विश्व सुखी हो, ऐसा जीवन जीने का संकल्प लेने तथा उसे कार्यान्वित करने का साहस केवल एक योगी ही कर सकता है। मानव को शांति और सुख का रास्ता दिखाने के लिए योग एक साधन है।

भारत ने विश्व कल्याण हेतु पूरे विश्व को योग का संदेश दिया है। योग का उद्देश्य है– "सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयाः" अर्थात् विश्व के सभी लोग सुखी रहें तथा निरोग रहे इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। इस दिन विश्व कल्याण के लिए लोगों को योग की जानकारी दी जाती है तथा उन्हें आसन और प्राणायाम करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

योग क्या है ?

योग प्राचीन भारतीय परंपरा एवं संस्कृति की अमूल्य देन है। योग अध्यात्मिक अनुशासन एवं अत्यंत सूक्ष्म विज्ञान पर आधारित ज्ञान है जो मन और शरीर के बीच सामंजस्य स्थापित करता है। योग का शाब्दिक अर्थ है– जुड़ना या जोड़ना, अर्थात् दो तत्वों का मिलन। योग में स्वयं का स्वयं से, प्रकृति से तथा परमात्मा से जुड़ाव हो जाता है। तब जीव भाव में पड़ा मनुष्य परमात्मा से जुड़कर अपने निजी आत्मस्वरूप में स्थापित हो जाता है। यौगिक ग्रंथों के अनुसार योग व्यक्तिगत चेतनता को सार्व भौमिक चेतनता के साथ एकाकार कर देता है।

योग मात्र व्यायाम नहीं है, बल्कि स्वयं के साथ, विश्व और प्रकृति के साथ एकत्व खोजने का भाव है। योग हमारी जीवनशैली में परिवर्तन लाकर हमारे अंदर जागरूकता उत्पन्न करता है तथा प्राकृतिक परिवर्तनों से शरीर में होने वाले बदलावों को सहन करने के लिए शरीर को तैयार करता है। यह स्वस्थ जीवन जीने की कला है।

योग का इतिहास

योग भारत की प्राचीन परंपरा है। भारतीय संस्कृति में भगवान शिव को आदियोगी माना गया है, जिन्होंने योग की नींव डाली। योग का सबसे पहले उल्लेख ऋग्वेद में मिला। भारतीय प्राचीन ग्रंथों भगवद् गीता, उपनिषद्, योग वशिष्ठ, हठयोग प्रदीपिका, गेरांड संहिता, शिव संहिता, पुराण आदि में भी योग का उल्लेख किया गया है। आरंभ में योग आश्रमों और गुरुकुलों तक ही सीमित था। बाद में अनेक ऋषि मुनि व योगाचार्य हुए, जिन्होंने योग को आगे बढ़ाया। महर्षि पतंजलि ने प्राचीन समय में प्रचलित योगाभ्यासों को व्यवस्थित व वर्गीकृत किया,

योग से संबंधित ज्ञान को पतंजलि योग सूत्र नामक ग्रंथ में क्रमबद्ध तरीके से व्यवस्थित किया। इसलिए इन्हें योग का जनक कहा गया है।

अष्टांग योग

महर्षि पतंजलि के अनुसार– योगश्चितवृति निरोधः, अर्थात् चित की वृत्तियों का निरोध कर देना योग है। चितवृत्ति निरोध के लिए महर्षि पतंजलि ने अष्टांग योग का मार्ग दिखाया, यह संपूर्ण योग है। इस के आठ अंग हैं:–

1. यम 2. नियम 3. आसन 4. प्राणायाम 5. प्रत्याहार 6. धारणा 7. ध्यान 8. समाधि

यम : समाज के लिए उपयोगी है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी न करना), ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह– यह पांच यम है।

नियम : अपने व्यवहार को अच्छा करने के लिए है। शौच (स्वछता), संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान – यह 5 नियम है।

आसन : आसनों का अभ्यास शरीर और मन को स्वस्थ रखने के लिए किया जाता है।

प्राणायाम : श्वास–प्रश्वास का सुव्यवस्थित एवं नियमित अभ्यास है। यह श्वसन प्रक्रिया के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए और मानसिक विकारों को दूर करने के लिए है।

प्रत्याहार : इंद्रियों को अंतर्मुखी बनाने के लिए है।

धारणा : एकाग्रता बढ़ाने के लिए तथा ध्यान चित की शुद्धि के लिए है। इसी **ध्यान** में चिंतन अर्थात् शरीर और मन का एकीकरण धीरे–धीरे **समाधि** की अवस्था में परिवर्तित हो जाता है।

योग के लाभ

योग मूल रूप से एक अध्यात्मिक क्रिया है। लेकिन आधुनिक समय में इसे शरीर को स्वस्थ रखने के लिए किया जाता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आसन, प्राणायाम एवं ध्यान का अभ्यास करते हैं। अच्छे स्वास्थ्य के लिए यह एक उत्तम विधि है।

- प्रतिदिन आसनों के अभ्यास से हमारी मांसपेशियाँ तथा हड्डियाँ मजबूत बनती है।
- नियमित योग करने से हमारी शारीरिक थकान और कमजोरी दूर होती है योग आलस्य दूर कर शरीर में स्फूर्ति भर देता है।
- आसन की विभिन्न मुद्राओं के अभ्यास में शरीर को तानने व सिकुड़ने से रक्त का संचार संपूर्ण शरीर में समान रूप से होता है, पाचन शक्ति बढ़ती है, निष्कासन क्रिया सहज होती है, सभी ग्रंथियों का रसस्राव नियंत्रित होता है। जिससे मधुमेह, उच्च रक्तचाप, निम्न रक्तचाप, थायराइड– पैराथायराइड के दोष तथा जीवनशैली संबंधी विकारों का प्रबंधन संभव है।

- योगाभ्यास से हमारे स्थूल शरीर के साथ हमारा सूक्ष्म शरीर भी प्रभाव में आता है। तन और मन में तालमेल बिठाना आसन की सुखद स्थिति है। अतः "स्थिर सुखं आसनं" अर्थात् सुख पूर्वक स्थिर रहना ही आसन है।
- योग अवसाद, थकान, चिंता संबंधी विकार और तनाव को कम करने में सहायक है।
- प्राणायाम के अभ्यास में श्वास–प्रश्वास नियंत्रित होने से अनेक शारीरिक और मानसिक लाभ मिलते हैं, फेफड़े मजबूत बनते हैं।
- रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, रोग भूले से भी नजदीक नहीं आते है तथा स्वस्थ आयु वृद्धि होती है।
- एकाग्रता बढ़ती है, मन अंतर्मुखी होता है। जिससे व्यवहारिक सुधार आता है, नकारात्मकता दूर होती है, मन में शुभ विचार आते हैं।
- योगाभ्यास से शरीर में वात, पित, कफ के दोष दूर होते हैं।

संक्षेप में यदि आप चाहते है – शरीर को स्वस्थ और सुडौल बनाना, जीवन को सुखी–प्रसन्न बनाना, विपत्तियों का मुकाबला कर सकना, निष्पक्षता, सरलता, उधमी बनना, यदि आप चाहते हैं कि शरीर और मन की शुद्धि हो, महान विचारों में वृद्धि हो, निष्काम सेवा–भाव बढे, सुख–दुःख में समता बनी रहे, मानवता–हित, प्रेम उमडता रहे, आत्मबोध हो, तो योग कि शरण में आयें। योग को अपने जीवन का अंग बनायें। योग को अपनाकर मानव जाति सुखी रहे, स्वस्थ रहें तथा विश्व का कल्याण हो। इसी कामना के साथ–

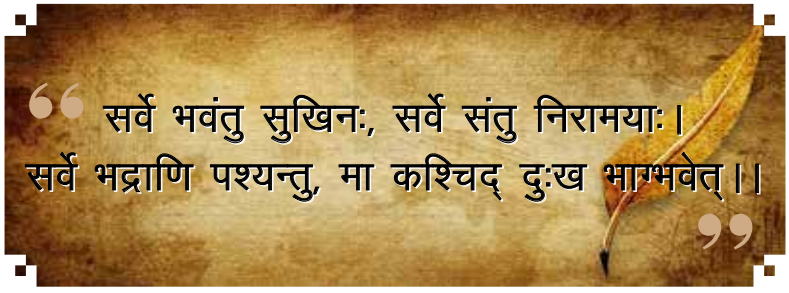

तसनीम फातिमा
(संविदा वित्त)

15 झूठ का कारोबार

झूठ का कारोबार हुआ जाता है,
कैसा ये संसार हुआ जाता है,

झूठ का बजता डंका है,
और सत्य पर नित होती शंका है,

नाकारों का यहां दौर है,
और कामगारों का न कोई मोल है,

दौलत के संग मूर्ख भी विद्वान है,
और दीन–विद्वान का नित घटता मान है,

मतलब की चाशनी से अब रिश्ते चलते हैं,
सच कहने से लोग अब डरते हैं,

आज दिखावा बना पहनावा है,
और यह संसार बना एक छलावा है,

झूठ कितना भी ताकतवर क्यूँ न हो,
एक दिन सत्य ही जीत कर आता है।

वासुदेव बंसल
(हाइड्रोकार्बन अन्वेषण
लाइसेंसिंग नीति)

16 टीटी की नौकरी

35 साल रेलवे में टीटी की नौकरी करने के बाद रिटायर हुए। घर पर रहने लगे।

एक महिने बाद ही पत्नी ने पति से कहा डाक्टर के पास जाना है, मुझे थोड़ा–सा चैकअप कराना है।
शाम पत्नी को डाक्टर के पास ले जाकर पति ने कहा जाइए दिखाईये,

उसने रोनी सी सूरत बनाकर कहा आप आगे आईये
मेरा तो बहाना था,
दरअसल आपको दिखाना था।

डाक्टर साब, ये पिछले 35 साल रेलवे में टीटी रहे,
सप्ताह में केवल दो दिनों के लिये घर आते थे, बाकी दिन बाहर रहते थे।
लगातार ''रेल यात्रा के वातावरण'' को सहते थे।

अब रिटायरमेंट के बाद घर आते ही कमाल कर दिया है,
चार फीट चौड़े पलंग को काट कर दो फीट का कर दिया है,
अटैची को सांकल से बांध कर ताला लगाते हैं,
तकिये में हवा भरते हैं और चप्पलें सिरहाने रखते हैं,
कमरे का ट्यूब लाइट अलग हटा दिया है और उसकी जगह जीरो वाट का वल्ब लगा दिया है।

टेप रिकार्डर से फिल्मी गानों का कैसेट निकाल कर,
रेल्वे एनाउंसमेंट,
गाड़ी चलने की ध्वनि,
घंटी की घनघनाहट,
और
गरम चाइय, समोसा की कर्कश आवाज का केसेट लगाते हैं,
मूंगफली के छिलके और बीड़ी सिगरेट के टुकड़े पलंग के चारों ओर फैलाते हैं।

मैं तो रात भर जागती हूँ,
और ये आराम से सो जाते हैं,
पता नहीं कैसी जिंदगी जीते हैं,
कप में चाय दो, तो कुल्हड़ में पीते हैं।

एक रात मेहमान आये तो मैंने इन्हें जगाया,
इन्होने करवट बदली और मेरे हाथ में ट्रेन का टिकट और सौ रुपये का नोट थमाया।

मैने कहा ये क्या है, तो बोले रसीद नही बनाना इंदौर आये तो ख्याल से उठाना।

पिताजी से, दहेज में मिला सोफासेट आधे दामों में बेंच आये है,
बदले में दो सीमेंट की ब्रेंच खरीद लाये है।

बेडरूम में लगी पेंटिग्स को अलग कर दिया है,
उनकी जगह, भारतीय रेल आपकी अपनी सम्पत्ति है,
जंजीर खींचना मना है,
लिखवा दिया है।

एक रात इनके पास आकर बैठी,
इन्होने पांव मोड़े और कहा आइए,
आइए आराम से बैठिये।

डाक्टर साब बताने में शर्म आती है पर आपसे क्या छिपाना है, इन्होने ने मुझसे पूंछा,
बहन जी आपको कहाँ जाना है।

डायनिंग टेबिल पर खाना खाने से मना करते हैं,
पूड़ियां मिठाई के डिब्बे में और सब्जी को प्लास्टिक की थैली में भरते हैं।

एक रात मेरे भाई और पिताजी आये,
दोनों इनकी हरकत से बहुत लजाये,
रात में भाई ने इनकी अटैची जरा सी खिसकाई,
ये गुस्से में बोले जंजीर खींचू चोरी करते शर्म नहीं आई।

सुबह सुबह बूढ़े पिताजी जल्दी उठ कर नहाने जा रहे थे,
बालकनी पर इनके पास वाली खिड़की से आ रहे थे,
उन्होंने खिड़की से हाथ डाल कर इन्हें जगाया,
इन्होने गुस्से में कहा इस तरह से मत जगाओ,
यहाँ कुछ नहीं मिलेगा, बाबा, आगे जाओ
पिताजी आगे गये तो उन्हें वापस बुलाया।

उन्हें एक रुपये का सिक्का दिया और पूंछा कौन सा स्टेशन आया।

इनका अजीब कारनामा है,
एक पर एक हंगामा है,
अभी कबाड़ी के यहाँ से एक पुराना टेबिल फेन मंगवाया,
छत पर लटके अच्छे खासे सीलिंग फेन को उतार कर उसकी जगह टेबिल फेन लटकाया।

उसे चालू करने विचित्र तरीका अपनाते हैं,
जेब से कंघी निकाल कर पंखा घुमाते हैं।

सुबह मंजन, ब्रश और साबुन निकाल कर बाथरूम की ओर जाते हैं,
मैं कहतीं हूँ बेटा गया है,
तो वहीं लाइन लगाते हैं।

समझाती हूँ आ जाओ, तो रोकते हैं,
हर दो मिनट के बाद बाथरूम का दरवाजा ठोकते हैं।

इन्होने पूरे घर को सिर पर उठा लिया है,
घर को वेटिंग रूम और बैडरूम को ट्रेन का कम्पार्टमेंट बना दिया है।

इनके साथ बाकी जिंदगी कैसे कटेगी हम यह सोच कर डरते हैं,
और ये सात जनम की बात करते हैं,
हम तो एक ही जनम में पछताये,
भगवान किसी युवती को रेलवे के टीटी की पत्नी न बनाये !

रिंकू यादव
(पत्नी श्री सुदीप राय)

17 दया

"दया" इसकी परिभाषा देने जाएँ तो सुनने में बड़ा–ही मधुर लगता है, मानो किसी ने; किसी पर अनुकंपा की हो पर वास्तविकता तो यह है कि यह एक ऐसी नशाखोरी है जो लेने एवं देनेवालों का पीछा कभी नहीं छोड़ती है। इसको ग्रहण करनेवाले अपनी मजबूरी एवं दरिद्रता की दुहाई देकर इसे प्राप्त करते हैं और देनेवाले अपना बड़प्पन या यूँ कहें कि पुण्य अर्जित करने हेतु दान करते हैं।

यह दया वाला दान बड़ा ही प्रलयंकारी है। एक बार इसे प्राप्त करने के पश्चात, इसके प्रति चाहत और बढ़ती ही जाती है, फिर तो नए–नए बहाने पनपने लगते हैं। खुद की रोटी का स्वाद, दया की रोटी के आगे फ़ीकी लगने लगती है और जहाँ इसके मार्ग में अवरूद्धताएँ नज़र आने लगे, वहीं से उस व्यक्ति– विशेष के प्रति हीन भावनाएँ उत्पन्न होनी प्रारंभ हो जाती हैं। दया मनुष्य को एक ऐसे कगार पर ला खड़ा करता है, जहाँ से उसे कुछ भी नहीं सूझता। अपनी समर्थता, असमर्थताओं में तब्दील होने लगती है। दया से प्राप्त दान महँगा एवं श्रम सस्ता प्रतीत होने लगता है। अगर इतिहास के पन्नों को पलटें तो दानवीरों में सूतपुत्र कर्ण, महाबली, द्वापर युग में पांडव, त्रेतायुग में मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम अवश्य नजर आएंगे; जिन्होंने किसी–न–किसी कारणवश दान अवश्य किए हैं। अब यह तो ज्ञात नहीं कि ऐसी कौन सी मंसा या भावना के वशीभूत होकर, उन्होंने ये दान किए! परंतु इनकी देन, दानों के इतिहास में सुप्रसिद्ध एवं सर्वोपरि है। दया की भेंट लेनेवाले, दानवीरों की महता न जान पाते। उन्हें तो बस यह एक उनकी इच्छापूर्ति का साधन मात्र प्रतीत होता है। जिसके लिए वे स्वयं को नीचा साबित करने से भी नहीं चूकते।

आज दया की परिभाषा कुछ भिन्न है। इसे अगर चापलूसी का नाम दिया जाए तो ये गलत न होगा ! आज सब केंकड़े की भाँति एक–दूसरे के पैरों को खींच; खुद के लिए नई सीढ़ियाँ बना रहे हैं। एक का दु:ख – दर्द दूसरों का आनंद बन गया है, लोग इसे खुद की जीविका का खूब श्रोत बनाए जा रहे हैं। न जाने कब इस दयावाले दान के सिलसिले का अंत होगा? कब हम एक – दूसरे को समझने का प्रयास करेंगे ? कैसे और कब किसी के काम में साझीदारी करेंगे ? कब चटपटी – मसालेदार बातों से हम खुद को संतुष्ट करना बंद करेंगे ? कब हम अपने – बेगानों की सोच छोड़ आगे बढ़ने तथा मजबूत बनने का यथासंभव प्रयास करेंगे ?

उम्मीद है कि हम शीघ्र–ही मनुष्यों में छिपी मनुष्यता देख पाएंगे,

क्योंकि;–

"दया से न बनती है शान"
"मानव श्रम ही है एकमात्र पहचान"

श्रीमती प्रभा कुमार
(पत्नी श्री सिद्धार्थ कुमार)

18 दो नन्हीं आँखें

दो नन्ही **आँखें**
यूँ देखती हैं मुझे
एक विश्वास से
कि मैं, भर दूंगी, जीवन में सब रंग
जिनकी उन्हें आस है।

दो नन्ही **आँखें**
देखती हैं मुझे
एक आशा के साथ
कि जीवन के हर सुख दुःख में
मैं नहीं छोडूंगी उनका साथ।

वो दो नन्ही **आँखें**
कभी कभी करती हैं मुझसे सवाल
कि आने वाले जीवन में क्या होगा
तो, कब अच्छा होगा, का मैं देती हूँ दिलासा।

इन दो नन्ही आँखों की चमक
भर देती है उजाला मेरे जीवन में
इन्हें देखकर ही बीतता है मेरा दिन
बीतती है रात, होती है सुबह शाम।

गर आ जाएं आसूं, इन दो नन्ही आँखों में
तो डूब जाता है मेरा मन उस सैलाब में
तब मन ही मन मैं वादा करती हूँ
नहीं गिरने दूँगी इन्हें जमीं पर
थाम लूंगी इन्हें अपने हाथों में
करूंगी यह प्रयास, बस यह प्रयास

योगक्षेम शर्मा
(भूभौतिकीय सर्वेक्षण विभाग)

19 परिवार

रेलवे के पदाधिकारी मैनेजर महेंद्र सिंह जल्दी–जल्दी अपना सामान बाँध रहे थे। मदनगोपाल उनकी सहायता कर रहा था। आज रात की ट्रेन थी मैनेजर साहिब की जिससे उनको अपने घर जाना था। मैनेजर साहिब रेलवे में मैनेजर के पद से आज सेवानिवृत होकर रात अपने घर की ओर निकालना था। मैनेजर साहिब यहाँ प्रगति–नगर में लगभग 17 साल से अपने दूसरे रेलवे के कर्मचारियों के साथ रह रहे थे। प्रगति नगर को रेलवे के लोगों ने ही बसाया था। आज उनका रेलवे विभाग में आखिरी दिन था। अपनी पूरी जिंदगी उन्होंने घर से दूर रेलवे की सेवा में लगा दी; मदनगोपाल शुरू से ही उनका असिस्टेंट रहा। खाना बनाता, घर की सफाई करता, उनकी हर जरूरत का खयाल रखता था। आज इन लोगों को छोड़कर चले जाने का दुःख तो है लेकिन साथ–साथ कल घर वापसी की खुशी भी है। घर जाकर ज़िंदगी के दूसरे पहलू को जीएंगे। मैनेजर साहब के दो बेटे और एक बेटी है गाँव में। बड़े बेटे से एक पोता और एक पोती भी है। दोनों बेटे नौकरी करते हैं बेटी अभी कॉलेज में पढ़ती है और कम्पीटिशन की तैयारी भी कर रही है। दोनों बेटों की शादी कर दी थी बेटी भी जवान हो गई है जिसकी शादी करनी बाकी है। यह सब सोचकर बड़े खुश थे कि घर जाकर पूरे परिवार, बीवी बच्चों के साथ बाकी की बची जिंदगी बिताएंगे।

उनके लिए यह जगह छोड़ना बड़ा दुखद था। यह कॉलोनी एक परिवार की तरह बन गई थी; पड़ोस और सब साथी लोग उन्हें मैनेजर साहब कहकर बुलाते थे, पड़ोस में जब भी किसी के घर में कुछ समारोह होता या कोई पकवान बनते मैनेजर साहब को याद कर लिया जाता। मैनेजर साहब उन सबके पारिवारिक सदस्य के रूप में थे और मदनगोपाल तो था ही उनकी सेवा के लिए। लगभग 17 साल से एक बेटे कि तरह और एक सेवक की तरह उनका खयाल रख रहा था। उनको किसी प्रकार का कष्ट न होने दिया। मैनेजर साहब पूरी जिंदगी इन लोगों के बीच निकाल दी लेकिन एक टीस हमेशा से दिल में रहती थी कि वो अपने बीवी–बच्चों से हमेशा दूर ही रहे, बीच–बीच में छुट्टियों पर जाते थे तो, बीवी बच्चों की हर जरूरतें पूरी की, लेकिन ना चाहते हुए भी पारिवारिक कारणों से कभी उनको साथ ना रख सके, धीरे–धीरे उनको भी आदत पड़ गई। लेकिन वो सोच रहे थे कि बाकी कि ज़िंदगी हर पल बीवी बच्चों के साथ अपने परिवार के साथ बिताएंगे और खुशी से रहेंगे, अपने पोते पोतियों के साथ खेलेंगे, अपने बेटों के

साथ मिलकर कोई नया बिज़नस शुरू करेंगे, बिटिया की शादी करेंगे, बीवी के साथ बैठकर अपने अनुभव साझा करेंगे।

वो ये सब सोच ही रहे थे कि मदनगोपाल ने सारा सामान पैक कर दिया। सारा दिन ऑफिस में बिताया, अपने सभी साथियों से मिले उनको अच्छी विदाई दी गई और रात को कॉलोनी के पड़ोसी और बहुत सारे लोग उनको रात की ट्रेन से छोड़ने के लिए स्टेशन पर आए। बहुत सारे लोग रोने लग गए। मदन गोपाल तो फूट–फूट कर रोने लगा, वो उनके पिता समान थे। सबसे विदाई लेकर मैनेजर साहिब अगले दिन अपने गांव पहुंच गए। गांव में पहुंच कर काफी देर इंतजार करते रहे लेकिन बाद में खुद ही रिक्शा करके घर की तरफ चल दिए। घर जाकर देखा दोनों बेटे अपनी–अपनी नौकरी पर चले गए थे, बिटिया कॉलेज चली गई थी और बीवी घर के कामों में व्यस्त थी। उन्होंने अपना सामान रखा और एक अलग कमरे में जाकर बैठ गए। जब सब आए तो पिताजी को प्रणाम किया, हालचाल पूछा और अपने–अपने कमरों में चले गए। बेटी ने थोड़ी देर बात की और वह भी कोचिंग क्लास करने चली गई। ऐसे ही धीरे–धीरे एक हफ्ता बीत गया। मैनेजर साहब को अपने रेलवे कॉलोनी वाले साथियों, पड़ोसियों और मदनगोपाल की याद आ रही थी तो उन्होंने फोन घुमाया और सबसे काफी देर तक बातें की।

धीरे–धीरे सप्ताह बीत गया, महीना बीत गया, बिटिया सुबह कॉलेज और शाम को कोचिंग चली जाती थी, दोनों बेटे अपनी नौकरी में व्यस्त थे, बीबी घर के कामों में इतनी व्यस्त हो गई थी कि उसने अपनी अलग तरह की दुनिया बना ली थी, वही चूल्हा–चौका, बेटों का ध्यान रखना इत्यादि। धीरे–धीरे मैनेजर साहब को लगा जैसे वह इस परिवार के सदस्य हैं ही नहीं। उनको रेलवे कॉलोनी की बड़ी याद आती थी किस तरह से उनके कोई न कोई पड़ोसी अपने घर बुला लेता था, उनके त्यौहार, उनके समारोह में सम्मिलित होते, उनके बच्चों के जन्मदिन पर सम्मिलित होते उनको एक परिवार से कहीं बढ़कर इज्जत दी जाती थी। धीरे–धीरे मैनेजर साहब को लगने लग गया कि यहां जिस परिवार के साथ वह अपने जीवन का दूसरी पारी बिताने आए हैं उस परिवार के लोगों ने अपनी–अपनी अलग दुनिया बसा ली है और उस दुनिया में उनके लिए कुछ ज्यादा जगह बची हुई नहीं है; सब अपने–अपने कामों में व्यस्त रहते हैं। रेलवे कॉलोनी के लोगों ने बार–बार मैनेजर साहब को बोला था कि आप रिटायरमेंट के बाद भाभी जी को भी ले आइएगा और यहीं रहिएगा।

यहां पर उनको पारिवारिक मामलों में भागीदारी का कोई मूल्य भी नहीं था, एक बार उन्होंने अपनी बिटिया की शादी की बात चलानी चाहिए तो बिटिया नाराज हो कर चली गई, बीवी ही मैनेजर साहब से झगड़ने लग गई कि परेशान ना करो वह अब बड़ी हो गई है अपने लिए साथी खुद देख सकती है। अपने बेटों से जमीन–प्रॉपर्टी की बातें करते तो वह इस पर ज्यादा ध्यान नहीं देते थे, पोते ज्यादातर समय अपनी मां और अपने दोस्तों के साथ खेलते रहते थे, मोबाइल में लगे रहते थे, दादा के सामने आने से इस बचते थे। इसी तरह से लगभग छह महीने बीत गए। एक दिन मैनेजर साहब ने अपना ट्रंक उठाया, उसमें कुछ सामान रखा और वापस स्टेशन की तरफ चल दिए, बीवी ने पूछा कहाँ जा रहे हो तो महेंद्र साहब ने बोला मेरा मन नहीं लग रहा है मुझे कुछ दिन के लिए रेलवे कॉलोनी में अपने साथियों से मिलकर आ रहा हूँ, दो–चार दिन में आ जाऊंगा। रेलवे कॉलोनी पहुंच गए, उनके पड़ोसियों और मित्रों ने उसका बहुत स्वागत किया, मदनगोपाल खुशी से जैसे फूला नहीं समा रहा था। उसने अपने साहब के लिए खाना बनाया, जलेबी लेकर आया था। मैनेजर साहिब ने अपने बचे हुए पैसे से एक मकान लिया और वहीं पर रहने लग गए उन्होंने लगभग हफ्ता भर इंतजार किया उनके घर से कोई फोन नहीं आया फिर उन्होंने खुद ही अपनी पत्नी को फोन किया और कहा भाग्यवान तुम इधर आ जाओ हम आज के बाद से यही रेलवे कॉलोनी में रहेंगे, उनकी बीवी ने कहा जहां बच्चे हैं, उसको वहीं रहना पड़ेगा, इन सबको कैसे संभाला जाएगा और आप वहां क्या कर रहे हैं सुनकर मैनेजर साहब ने निश्चित कर लिया उनकी पत्नी का भी अलग–अलग संसार भर चुका है और वापस नहीं आएगी अभी वही असली परिवार बन चुका था और बाकी की जिंदगी वहीं पर रहने का निश्चय कर लिया।

कुमुद मोदी
(माता जी, आलोक कुमार)

20 बारिश

याद.. आ गई वो..
बचपन की बारिश..।

हाथों... में भरना...
बूंदों... की लड़ियाँ...।

भींगना... मचलना
बूंदों... के संग... खेलना...।

सावन... के... झूले
सखियों... के, संग... खेले...।

वो... सावन की... कजरी...
संग... मिलकर... गाना...।

याद... आ गई वो...
बचपन की... बारिश...।

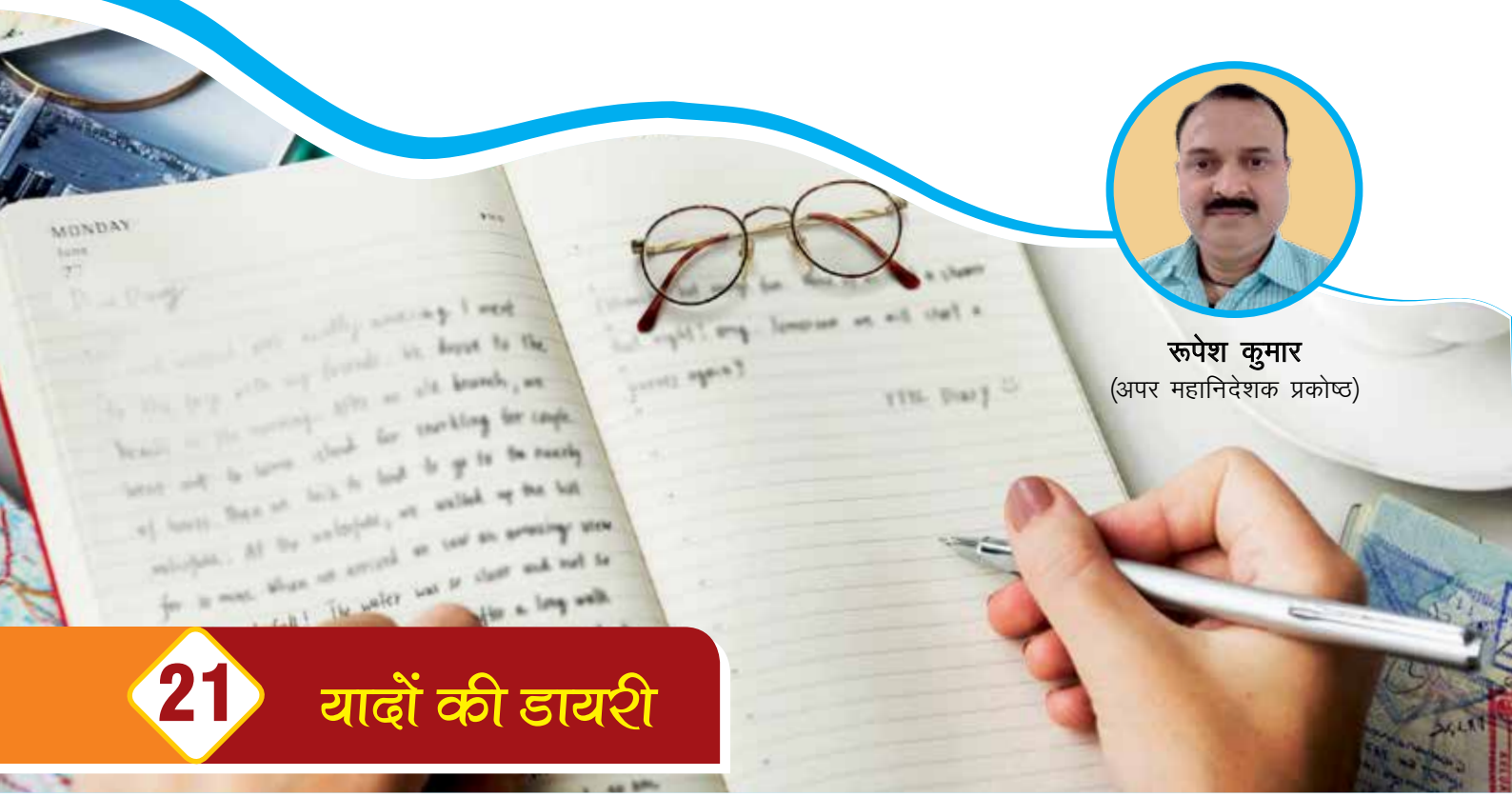

रूपेश कुमार
(अपर महानिदेशक प्रकोष्ठ)

21 यादों की डायरी

दिल की डायरी में कुछ यादें सजा रखी हैं,
कुछ खट्टी कुछ मीठी यादें दबा रखी हैं।

दोस्तों के संग दिनभर तपती धूप में खेलने का मजा,
झूठ बोलने पर पकड़े जाने पर पिटाई की सजा।

दिवाली के पटाखे और दोस्तों संग होली का मजा,
बरसात में नंगे पैरों में घूमने का मजा।

कुछ रुला देने वाली गम भी दबा रखे हैं,
अपनों से बिछड़ने के दर्द को भी दबा रखे हैं।

जिंदगी के सफर में हम आगे बढ़ते गए,
बचपन के उन लम्हों को खोते गए।

मोबाइल के कारण दोस्तों का संग छूट गया,
भागदौड़ की जिंदगी में अपने आप में खो गया

उम्र के पड़ाव में यादों की डायरी का सहारा है,
अकेले में कुछ हंसता कुछ गुनगुना लेता हूं।

दिल की डायरी में कुछ यादें सजा रखी है,
कुछ खट्टी और कुछ मीठी यादें दबा रखी है।

पूनम चुघ
(पर्यावरण)

22 रूस- यूक्रेन संघर्ष और वैश्विक ऊर्जा संकट

यूक्रेन पर रूसी आक्रमण और बाद में कई सरकारों द्वारा प्रतिबंधों को लागू करने से तेल और गैस बाजारों और निवेश पर तत्काल प्रभाव के साथ वैश्विक भू–राजनीतिक सीमा को दोबारा ठीक करने का काम किया है। जबकि युद्ध जारी है और पूर्ण निहितार्थ उभरने में वर्षों लगेंगे, जमीन के ऊपर के जोखिम के कुछ शुरुआती परिणाम पहले से ही क्रिस्टलीकृत हो रहे हैं।

बाजार में बदलाव और मूल्य की गतिशीलता तत्काल लागत और लाभ पैदा करती है

एक ऊर्जा उत्पादक के रूप में रूस के वैश्विक महत्व और इसके मुख्य बाजार के रूप में यूरोप को देखते हुए, उस क्षेत्र में तेल और गैस की मांग और आपूर्ति का पूर्ण पैमाने पर पुनर्गणना वैश्विक प्रतिक्रिया का एक प्रमुख गैर–सैन्य घटक है। अब तक रूस पर लगाए गए उपाय सामान्य तेल और गैस व्यापार और शिपिंग को बाधित करने से कम हैं, जबकि इसकी तेल और गैस कंपनियां वित्त पर प्रतिबंध के बावजूद अभी भी विदेशों में निवेश कर सकती हैं। पश्चिमी कंपनियों ने रूस में निवेश से बाहर निकलने या रोकने की घोषणा की है, देश के तेल और गैस उत्पादन का केवल एक छोटा प्रतिशत है और इसलिए निकट अवधि में रूसी उत्पादन पर सीमित प्रभाव पड़ेगा।

इस संदर्भ में, चीन के नेतृत्व में एशिया प्रशांत क्षेत्र एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभर रहा है यदि रूसी उत्पादन की मांग में अनुमानित कटौती से पूरी तरह से कम है। सभी क्षेत्र कीमतों में वृद्धि और आर्थिक गतिविधियों और मांग में धीमी वृद्धि से प्रभावित होंगे, जबकि प्रतिद्वंद्वी उत्पादक राज्यों को उत्पादन और निर्यात में वृद्धि के अवसर दिखाई देंगे क्योंकि यूरोप अपनी ऊर्जा सोर्सिंग को फिर से संतुलित करता है।

निकट अवधि में, उच्च तेल और गैस की कीमतें रूस सहित शुद्ध निर्यातकों के लिए एक वरदान का प्रतिनिधित्व करती हैं। प्रमुख लाभार्थियों में अंगोला, इराक और कुवैत शामिल हैं, जिसमें सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में शुद्ध तेल निर्यात 50% से अधिक हो जाएगा, यह मानते हुए कि 2022 में ब्रेंट का औसत USD106/बैरल है। इसके विपरीत, शुद्ध आयातकों के लिए बढ़ती लागत मौजूदा मुद्रास्फीति के रुझान को बढ़ाएगी। जो

नागरिक अस्थिरता, चुनावी बदलाव और शासन परिवर्तन के खतरों को भड़का सकता है, जैसा कि दक्षिण एशिया के कुछ हिस्सों में पहले से ही हो रहा है।

वर्तमान और महत्वाकांक्षी उत्पादकों को नए अवसरों की खोज से लाभ होता है

बढ़ी हुई कीमतें और मांग के नए स्रोत उत्पादक राज्यों के लिए अवसर पैदा करेंगे जहां संसाधन उपलब्धता, परियोजना अर्थशास्त्र, निवेशक सहायता, और बुनियादी ढांचे की उपलब्धता सरकारी समर्थन के साथ मिलती है।

मौजूदा बुनियादी ढांचे तक पहुंच वाली गैस परियोजनाएं प्रतिस्पर्धा करने के लिए विशेष रूप से मजबूत स्थिति में हैं, विशेष रूप से अफ्रीकी और पूर्वी भूमध्यसागरीय आपूर्तिकर्ताओं को नए अवसर प्रदान करती हैं। कुछ मामलों में, यह उत्पादक राज्यों को तेल और गैस लाइसेंसिंग को पुनर्जीवित करने और संक्रमण रणनीतियों पर पुनर्विचार करने के लिए राजी कर सकता है। सरकारी नीति के सुस्त विकास, ऊर्जा संक्रमण के अनिश्चित प्रभाव, और उत्पादक सरकार की धारणा है कि कीमतों और आपूर्ति की गतिशीलता में बदलाव निवेश को आकर्षित करने के लिए पर्याप्त होंगे, को देखते हुए राजकोषीय शर्तों में बदलाव के धीमा होने की संभावना है।

ऊर्जा संक्रमण में जीवाश्म ईंधन की भूमिका के बारे में उच्च कीमतों, नए बाजार के अवसरों और अधिक यथार्थवाद के साथ, मेजबान सरकारें वर्तमान पर्यावरण की चुनौतियों का जवाब कैसे देती हैं, यह उनके संसाधनों के पैमाने और परिपक्वता, उनके आर्थिक साधनों और उनके आधार पर अलग–अलग होगा। हाइड्रोकार्बन पर संरचनात्मक निर्भरता। जबकि देश की विशिष्टताएं महत्वपूर्ण हैं, उत्पादक सहकर्मी समूहों के बीच मतभेद ध्यान देने योग्य हैं:

- ब्राजील, कनाडा, मैक्सिको, नॉर्वे, अमेरिका और यूके जैसे विविध उत्पादकों को प्राथमिकताओं को संतुलित करने की संभावना है, ऊर्जा सुरक्षा के साथ शायद घरेलू हाइड्रोकार्बन उत्पादन के लिए दृष्टिकोण बदल रहा है, भले ही दीर्घकालिक ऊर्जा संक्रमण उद्देश्य बने रहें।
- चीन, मिस्र, भारत और ट्यूनीशिया जैसे शुद्ध आयातकों के उत्पादन को बनाए रखने और बढ़ाने के लिए मौजूदा रणनीतियों को दोगुना करने की संभावना है।
- साइप्रस, मोरक्को, मोजाम्बिक और नामीबिया जैसे फ्रंटियर/शुरुआती चरण के उत्पादकों, जिनके पास कोई मौजूदा निर्यात बुनियादी ढांचा नहीं है, को अब मुद्रीकरण में तेजी लाने के अवसर मिल सकते हैं।
- तेल आश्रित, ज्यादातर मामलों में, अल्जीरिया, अंगोला, इराक, नाइजीरिया और ओमान जैसे वर्तमान या पूर्व प्रमुख उत्पादकों को अपने शेष भंडार का मुद्रीकरण करने, बुनियादी ढांचे का लाभ उठाने और विविधीकरण में निवेश करने के अवसर की संभावित लंबी खिड़की मिल सकती है। योजनाओं की योजना बनाने और उन्हें क्रियान्वित करने की क्षमता है।
- क़तर, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात जैसे अमीर पेट्रोस्टेट वैश्विक ऊर्जा संक्रमण से पहले शेष संसाधनों का मुद्रीकरण करने के प्रयास में उत्पादन को बनाए रखने और बढ़ाने के लिए मौजूदा रणनीतियों को बनाए रखने और/या तेज करने की संभावना रखते हैं।

विशिष्ट प्रतिक्रियाएं देश के अनुसार अलग–अलग होंगी, बड़े हिस्से में जमीन के ऊपर के कारकों द्वारा आकार दिया जाएगा। वर्तमान स्थिति में विशेष प्रासंगिकता वाले जमीनी जोखिमों में शामिल हैं:

- भू–राजनीतिक जोखिम, विशेष रूप से रूस के निकट पड़ोस में
- वास्तविक प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि, क्योंकि तेल और गैस के उत्पादन और निर्यात में उतार–चढ़ाव होता है और कच्चे और प्राकृतिक गैस की ऊंची कीमतें उपभोक्ता खर्च को प्रभावित करने लगती हैं।

- प्राथमिक वित्तीय संतुलन और हस्तांतरण जोखिम, कुछ ऐसे ही कारकों को दर्शाता है जो समग्र आर्थिक गतिविधि को प्रभावित करते हैं लेकिन प्रतिबंधों के साथ पूंजी और विदेशी मुद्रा नियंत्रण की संभावनाओं में एक नया आयाम जोड़ते हैं।
- मंत्रीस्तरीय/नीतिगत अस्थिरता, क्योंकि कुछ सरकारें ऊर्जा सुरक्षा को फिर से प्राथमिकता देती हैं, हालांकि मामलों में नागरिक समाज के जोखिम के स्तर से विवश हैं, क्योंकि मुद्रास्फीति का दबाव बढ़ता है।

नए सिरे से ऊर्जा सुरक्षा चिंताओं से प्रभावित ऊर्जा संक्रमण के प्रयास

यूक्रेन के आक्रमण का मुख्य रूप से यूरोप में ऊर्जा संक्रमण के लिए निहितार्थ होगा, जहां ऊर्जा सुरक्षा पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करने से कम क्रम में अतिरिक्त जीवाश्म ईंधन की आपूर्ति को सुरक्षित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है। जैसा कि ऊपर बताया गया है, निकट–अवधि के उपायों में एलएनजी रीगैसिफिकेशन के साथ–साथ बायोमीथेन और नवीकरणीय हाइड्रोजन के उत्पादन को बढ़ाने और पवन और सौर को फ्रंट–लोड करने के लिए निवेश में निवेश शामिल होगा। इसके अलावा, ऐसे संकेत हैं कि कुछ देश इस बात को स्वीकार कर रहे हैं कि परमाणु को एक बड़ी भूमिका निभाने की आवश्यकता होगी।

संयुक्त राज्य अमेरिका में, प्रशासन द्वारा ऊर्जा संक्रमण में तेजी लाने के प्रयासों को दोगुना करने की संभावना है। जबकि यूरोप को अतिरिक्त गैस की आपूर्ति करने का अभियान कुछ निकट–अवधि के प्रतिबंधों को कम कर सकता है, उदाहरण के लिए, नई पाइपलाइनों के आसपास और यहां तक कि पट्टे पर देने के लिए, जलवायु प्राथमिकता रहेगी।

दुनिया के बाकी हिस्सों में, सुरक्षा चिंताओं का बढ़ना उन उत्पादक देशों के लिए सकारात्मक साबित होगा जो ऊर्जा गरीबी का मुकाबला करने के लिए अपस्ट्रीम निवेश को सुरक्षित करना चाहते हैं और वित्त पोषण को आसान बना सकते हैं। कुल मिलाकर, हालांकि, उच्च कीमतों और आपूर्ति श्रृंखला के मुद्दों के साथ संयुक्त रूप से हाइड्रोकार्बन खपत को कम करने के प्रयास, लंबी अवधि में संक्रमण अनिश्चितताओं को कम करते हुए, मांग में वृद्धि की सीमा को कम कर सकते हैं।

गीता पाल
(भूविज्ञान और भूभौतिकी)

23 वक्त का खेल

गुज़र जाती हैं उम्र रिश्ते बनाने में,
पर बिगड़ने में वक्त नहीं लगता
घर बनाने में वक्त लगता है,
पर मिटाने में पल नही लगता!
जो कमाता है महीनों में आदमी,
उसे गवाने में वक्त नही लगता
दोस्ती बड़ी मुस्किल से बनती है,
पर दुश्मनी में वक्त नही लगता
जो उड़ते है अहम् के आसमा पर,
जमीन पर आने में वक्त नही लगता
हर तरह का वक्त आता है जिंदगी में,
वक्त के गुजरने में वक्त नही लगता।

पुष्पा मिश्रा
(माता, आश्चर्य चौबे)

24 विश्व वेदना

विपदा बड़ी है आई, मानव का काल बनकर।
यह भागती सी जिंदगी, कुछ रुक गई ठहर कर ।।

इन रुके हुए पलों में, चिंतन मनन सनातन।
शाश्वत सत्य ही में, पाओ अमूल्य जीवन।
चिंतन की बेला आई, अपने को समझो रुक कर।
ये भागती सी जिंदगी, कुछ रुक गई ठहर कर ।।

पैसा ही सब नहीं है, ये श्वास है बड़ा धन।
जो जाके फिर न आती, रह जाता सब धन।
अब समय जो मिला है जिओ प्रेम में बिताकर।
ये भागती सी जिंदगी कुछ रुक गई ठहर कर ।।

ज्ञान विवेक एकांत से, विपदा को दूर करना।
सत्य विचार सत्संग से, अपनों के संग रहना।
जो जी ना सके अभी तक, वह जी लो साथ रहकर।।
ये भागती सी जिंदगी कुछ रुक गई ठहर कर।।

विपदा बड़ी है आई मानव का काल बनकर।
ये भागती सी जिंदगी कुछ रुक गई ठहर कर।।

पूजा वर्मा
(पर्यावरण)

25 वो बचपन का सुकून

बहुत कुछ है मेरे पास, फिर भी दिल में मलाल है,
जवाब तो हैं बहुत, फिर भी जिंदगी से सवाल है
क्या थे वो बचपन के दिन, क्यों नहीं अब वो बचपन के दिन,
वो बिफिक्रे से लम्हें, कभी गिरते– कभी संभले
वो भाई से झगड़ना, फिर मां के पल्लू में छुप कर रोना
कभी हंसना–कभी हंसाना और कभी बेमतलब सा सो जाना
वो पापा की डाँट, फिर सर पर रख कर हाथ,
दर्द लेना सारा बांट
क्या थे वो बचपन के दिन, क्यों नहीं अब वो बचपन के दिन,
आज भी याद है स्कूल की वो मस्ती
इमली मिलती थी सस्ती–सस्ती
चव्वनी के वो जमाने, जैसे मिल जाते थे खजाने
दोस्तों के बीच के वो झगड़े आज भी गुदगुदाते हैं
हर दो दिन में गंदे हुए कपड़े याद आते हैं
यारों से नाराज हो जाना,
फिर कोई बात नहीं कह कर गले लग जाना
वो टिफ़िन के लिए लड़ाई, बातों बातों में पढ़ाई
क्या थे वो बचपन के दिन, क्यों नहीं अब वो बचपन के दिन,
अब तो सब रेत सा क्षणभंगुर लगता है,
हंसी नकली–खुशी नकली
इस मुस्कान की पीछे की वजह भी नहीं रही असली
सारे रिश्ते बेमाने से लगते हैं, बड़े अंजाने से लगते हैं
अपनों को खुश रखना क्यों जिम्मेदारी सी लगती हैं,
अपने ही काम से क्यों संतुष्टि नहीं मिलती है
ना माँ की वो मीठी सी गोद, ना सुबह की वो प्यारी सी ओस
अब तो सिर्फ संघर्ष ही संघर्ष है,
जिंदगी की गरम धूप ही न्यारी सी लगती है
बहुत कुछ है मेरे पास, फिर भी दिल में मलाल है,
जवाब तो हैं बहुत, फिर भी जिंदगी से सवाल है
क्या थे वो बचपन के दिन, क्यों नहीं अब वो बचपन के दिन,
क्या बदल गया इतने सालो में,
कहां छिप गया बचपन बहानों में।।

असित कुमार
(राष्ट्रीय डेटा रेपोजिटरी)

26 महाद्वीप अचल नहीं, गतिमान हैं

महाद्वीप अचल नहीं, गतिमान हैं: महाद्वीपीय विस्थापन से प्लेट विवर्तनिकी तक की यात्रा

(A Journey from Continental Drift to Plate Tectonics)

पेट्रोलियम यानी तेल और प्राकृतिक गैस एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संपदा है जो आज भी दुनिया की लगभग 57% ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करता है। यदि कोयले को भी शामिल करके देखें तो पूरी ऊर्जा की खपत में जीवाश्म ईंधन का हिस्सा 84% है। यद्यपि हमारी कोशिश है कि जलवायु परिवर्तन के मद्देनजर हम जल्द से जल्द अपनी निर्भरता जीवाश्म ईंधन पर कम से कमतर करें, किन्तु यह लक्ष्य आसान नहीं है। नतीजतन, आने वाले दशकों में भी बड़े पैमाने पर तेल और गैस पर हमारी निर्भरता बनी रहेगी।

यह सभी जानते हैं कि कुछ अपवादों को छोड़कर पेट्रोलियम परतदार (अवसादी) चट्टानों में पाया जाता है जहां ये विशेष जैविक, रासायनिक और भौतिक परिस्थितियों में लाखों वर्षों में निर्मित और एकत्रित होता है। ज्यादातर भूवैज्ञानिक मानते हैं कि जैविक पदार्थ जिनमें शैवाल, सूक्ष्मजीवी तथा वनस्पति आदि मुख्य हैं, ही विशेष ताप और दवाब में परतदार चट्टानों के बीच दबकर रासायनिक परिवर्तन के बाद तेल और गैस का निर्माण करते हैं। यह रासायनिक प्रक्रिया लाखों वर्षों में पूरी होती है और बनने के बाद यही तेल और गैस परतदार चट्टानों की विशेष अवस्थाओं में जमा होते हैं। ताप और दबाव का उपयुक्त वातावरण जहां ऑक्सीजन की कमी भी हो, चट्टानों के खास गहराई तक दबे होने पर ही संभव है। पेट्रोलियम एकत्रित होने के लिए चट्टानों का छिद्रमय होना आवश्यक है। इतना ही नहीं, उन चट्टानों की भी जरूरत है जो एकत्रित तेल या गैस को छिद्रमय चट्टानों की इस एक जगह से कहीं और प्रवाहित होने से रोकें या बाधित करके रख सकें। इस प्रकार, तेल और गैस के सृजन और संचयन के लिए हमें जिन तीन चीजों की आवश्यकता है, वे हैं 1. स्रोत चट्टानें जिनमे जैविक पदार्थ की अधिकता हो, 2. छिद्रमय चट्टानें जिनमे तेल और गैस बनने के बाद संग्रहीत हो सकें और 3. आवरण चट्टानें जो एकत्रित तेल और गैस के भंडार को कहीं और प्रवाहित होने या पलायन से रोक सकें। परतदार चट्टानों में उपरोक्त सभी प्रकार पाए जाते हैं। इसलिए तेल और गैस के लिए परतदार चट्टानें सर्वथा उपयुक्त पर्यावास (habitat) हैं।

तेल और गैस आमतौर पर 2–4 किलोमीटर की गहराई में मिलते हैं। तेल और गैस का भूवैज्ञानिक अन्वेषण उन्हीं परतदार चट्टानों की खोज है जिनमे उपरोक्त प्रकार मौजूद हों। भूवैज्ञानिक सर्वेक्षणों और कूपों के खनन के द्वारा परतदार चट्टानों की उपस्थिति और उनकी अवस्थाओं के बारे मे जानकारी प्राप्त की जाती है जहां तेल और गैस के होने की अधिकतम संभावना हो। अवसाद या तलछट (sediment) के भूपटल के निचले भागों में जमा होने से ही अवसादी द्रोणी का निर्माण होता है। इसलिए अवसादी द्रोणी तेल और गैस की खोज से संबंधित सभी प्रकार की गतिविधियों का क्षेत्र होता है।

अवसादी द्रोणी (Sedimentary Basin) जिस भूपर्पटी या भूपटल पर बनता है वह स्वयं पृथ्वी के स्थलमंडल (Lithosphere) पर स्थित है व उसका भाग है। पृथ्वी की ऊपरी लगभग 80 से 100 कि०मी० मोटी परत को स्थलमण्डल कहा है। भूविज्ञान के एक आधुनिक सिद्ध ांत, जिसे "प्लेट विवर्तनिकी" कहते हैं, के अनुसार पृथ्वी का स्थलमंडल कुछ बड़े और कई छोटे टुकड़ों में बँटा हुआ है। ये टुकड़े प्लेट कहलाते हैं। आधुनिक जानकारी के हिसाब से ये प्लेट स्थिर नहीं हैं, बल्कि अत्यंत धीमी गति से नीचे स्थित एस्थेनोस्फीयर की अर्धपिघलित परत पर तैर रहीं हैं। इन्ही प्लेटों के गतिशील होने, आपस में टकराने और घर्षित होने से पृथ्वी के धरातलीय स्वरूप का निर्माण, पर्वतों की उत्पत्ति और ज्वालामुखियों का विस्फोट होता है। प्रायः भूकम्प इन प्लेटों की सीमाओं पर ही आते हैं। प्लेटों की गतिशीलता के कारण भूपटल पर जो परिवर्तन होते हैं, उनका सीधा प्रभाव पेट्रोलियम पदार्थ के निर्माण और विशेष अवसादी चट्टानों में उसके संग्रहीत होने पर पड़ता है। यही वजह है कि प्लेट विवर्तनिकी (plate tectonic) का अध्ययन पेट्रोलियम अन्वेषण के लिए इतना महत्वपूर्ण माना जाता है।

अवसादी द्रोणियों के निर्माण और भूवैज्ञानिक समय अवधि मे इन द्रोणियों में बदलाव या परिवर्तन के मूल में इन्हीं प्लेटों की सापेक्षिक गतिमानता है। आज भूपटल और उस पर स्थित द्रोणियों के निर्माण, उनकी संरचना और समय के साथ उनमें आनेवाले परिवर्तनों से संबंधित कोई भी अध्ययन प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत के आधार के बिना पूरा नहीं माना जाता। लेकिन इस आधुनिक सर्वमान्य सिद्धांत के उद्भव और विकास की कहानी बहुत लंबी है और इसकी पृष्ठभूमि लगभग 100 वर्ष पीछे जाती है। यह पृष्ठभूमि जितनी रोचक है उतनी विवादास्पद भी रही है। आइए इस सिद्धांत और इससे पहले की पूर्ववर्ती अवधारणा जिसे महादेशीय विस्थापन की अवधारणा भी कहते हैं, उस पर संक्षेप में चर्चा करते हैं। वस्तुतः प्लेट विवर्तनिकी महादेशीय विस्थापन (continental drift) की अवधारणा का ही विकास है। महादेशीय विस्थापन की अवधारणा हमें भूविज्ञान के इतिहास में 100 साल पीछे ले जाती है और इस विलक्षण परिकल्पना कल्पना और इससे संबंधित विवाद से जिस व्यक्ति का नाम जुड़ा है वह थे मौसम विज्ञानी अल्फ्रेड वेगनर (Alfred Wegener)। अल्फ्रेड वेगनर ने जनवरी 1921 में महादेशीय विस्थापन की अवधारणा प्रतिपादित की थी जो तत्कालीन भूविज्ञानी स्थापनाओं के विरूद्ध थी, अतः यह अवधारणा व्यापक समय तक विरोध और विवाद में घिरी रही। इस अवधारणा पर थोड़ी चर्चा आवश्यक है।

महाद्वीप स्थिर नहीं गतिशील हैं: अल्फ्रेड वेगेनर और महादेशीय विस्थापन की परिकल्पना

सन 1910 के क्रिसमस की बात है। जर्मनी के तीस वर्षीय अल्फ्रेड वेगनर जिनकी ख्याति मौसम वैज्ञानिक और ग्रीनलैंड में मौसम संबंधी अनुसंधान के लिए हो चुकी थी, अपने किसी मित्र को भेंटस्वरूप मिले हुए विश्व के मानचित्र को देख रहे थे। अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका की आकृतियों को देखते हुए उनके दिमाग में यह विचार कौंधा की ये दोनों महाद्वीप किसी "jigshaw puzzle" के दो पूरक टुकड़े लगते हैं। दक्षिण अमेरिका की पूर्वी तटरेखा अफ्रीका के पश्चिमी तटरेखा से पूरी संगति के बैठ सकती हैं मानो दोनों एक ही किसी बड़ी आकृति के भाग हों। मानचित्र मे अटलांटिक के तल को देखते हुए यह संगति और भी बेहतर और स्पष्ट लगती है जब हम अटलांटिक सागर की ओर निकले हुए दोनों तरफ के उभरे किनारों की तुलना करते हैं।

वेगनर पहले व्यक्ति नहीं थे जिसने दोनों महाद्वीपों के बीच इस संगति पर ध्यान दिया हो। Roger Backon (1561-1626), Alexandar von Humboldt (1769-1859), Antonio Snider-Pellegerini (1802-1885) आदि ने भी इस समानता का जिक्र किया था।

Antonio Snider-Pellegerini ने 1858 में पेरिस से छपी अपनी पुस्तक में एक चित्र भी प्रस्तुत किया था जिसमे एक आदि अथवा प्रारम्भिक अमेरिकन महादेश (Atlantide) को अफ्रीका के साथ मिलाकर दिखाया है।

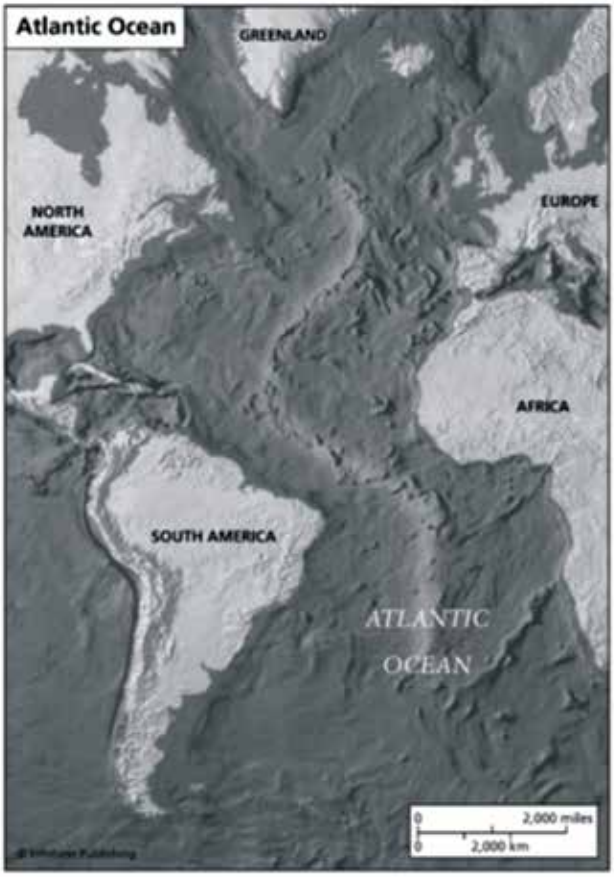

While looking at an atlas that a friend had received as a Christmas present, Alfred Wegener noticed that the shapes of South America and Africa looked as though the two continents could once have fitted together like puzzle pieces, although they are now separated by the Atlantic Ocean. This observation was the inspiration for Wegener's theory of continental drift.

हालांकि वेगेनर ने लिखा है कि जब उनके मन में यह विचार आया था तब वो इन व्यक्ति के नामों से अवगत नहीं थे। उस समय के अधिकांश भूगर्भ वैज्ञानिक मानते थे कि महद्विप हमेशा से अचल व स्थिर हैं और अपना स्थान नहीं बदलते। इतना अवश्य हुआ होगा महाद्वीपों के कुछ भाग जमीन से ऊपर उठ गए हों या फिर कुछ टुकड़े सागर में डूब गये होंगे। वेगेनर ने भी शुरू में इन महाद्वीपों के संयुक्त होने की संभावना को नकार दिया, लेकिन 1911 में अचानक ही उन्हें एक पुस्तक देखने को मिली जिसमें उन पशुओं के जीवाश्म का वर्णन था जो पश्चिमी अफ्रीका और ब्राजील मे Paleozoic Era (542–251 Ma) मे जीवित हुआ करते थे। आश्चर्य की बात यह थी कि इन दोनों स्थलों के कुछ जीवाश्म बिल्कुल एक समान थे। पुस्तक के लेखक ने अन्य भूगर्भ वैज्ञानिकों की तरह इस एकसमानता की व्याख्या यह कहकर की थी कि ये दोनों महादेश भूमिसेतु (Land Bridges) से जुड़े होंगे जो कालांतर मे सागर मे डूब गये होंगे। वेगनर भूभौतिकी के भी जानकार थे और उस आधार पर उन्हे भूमिसेतु के होने की संभावना संदेहास्पद लगी। एकाएक उन्हे यह विकल्प यानी महादेश ही क्षैतिज दिशा में विस्थापित हुए होंगे अटपटी नहीं लगी। अगले कई महीने वेगनर ने विविध वैज्ञानिक क्षेत्रों से प्रमाण एकत्रित करने मे लगाये। इस दौरान उनका विश्वास निश्चित हो गया था कि महाद्वीपों के विस्थापन की उनकी सोच सही है, यद्यपि यह सोच उस समय के भुगर्भशास्त्रियों की मान्यताओं के विरुद्ध थी। 1912 की जनवरी में वेगनर ने अपनी स्थापनाएं फ़्रंकफ़र्ट और मारबर्ग के वैज्ञानिक सम्मेलनों मे व्यक्त कीं । बाद मे इन दो भाषणों को जोड़कर दो पेपर के रूप मे इसी साल प्रकाशित भी किया। तब वेगनर के प्रस्तावित सिद्धांत पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया और वे शीघ्र ही ग्रीनलैंड के अपने बहुप्रतीक्षित अभियान में व्यस्त हो गये जो कि उनकी उत्कट अभिलाषा थी।

वेगनर ने महाद्वीपीय विस्थापन के सिद्धांत को संपूर्ण रूप में सन 1915 में पहली बार प्रकाशित किया–The Origin of Continents and Oceans। नए साक्ष्यों और प्रमाणों के साथ 1920, 1922 और 1929 में वे इसको क्रमशः परिवर्द्धित करते रहे।

वेगनर के सिद्धांत का मूल विचार यह है की महाद्वीप अपने भूगर्भीय अतीत में क्षैतिज दिशा मे विस्थापित होते रहे हैं या गतिशील रहे हैं। इस प्रक्रिया में उनके आकार, स्थान और सतह में परिवर्तन के साथ उनके सापेक्षिक और सागर द्रोणियों के साथ संबंध में भी बदलाव आया है। वेगे नर ने महादेश के इस गति के लिए जर्मन शब्द "verschiebung" का प्रयोग किया था जिसका अंग्रेजी अनुवाद "displacement" है। व्यवजूद इसके वेगेनर का यह सिद्धांत "Continental Drift" के नाम से प्रचलित हुआ।

पुरातन महाद्वीप

वेगनर के अनुसार लगभग 250 मिलियन वर्ष पहले Paleozoic Era में पृथ्वी के भूपटल के समस्त भूभाग जो समुद्र तल के ऊपर थे, आपस मे संयुक्त थे और एक विशाल भूभाग बनाते थे। इस बृहत प्राचीन महाद्वीप को वेगेनर ने "Pangea" का नाम दिया जिसका अर्थ होता है "समस्त पृथ्वी (All Earth)"। यह बृहत महाद्वीप पृथ्वी गृह के सतह क्षेत्र के लगभग आधे हिस्से तक विस्तृत था और चारों तरफ से काम गहरे सागर से घिरा हुआ था। इस सागर तो "Panthalassa" अर्थात "समस्त सागर (All Seas)" का नाम दिया गया। वेगे नर के हिसाब से Mesozoic Era में Pangea टूट गया और इसके टुकड़े एक दूसरे से अलग होने लगे। Jurassic Period में तीन प्राक महाद्वीप (proto-continent) बने–दो उत्तरी और एक दक्षिणी। एक उत्तरी महाद्वीप लगभग वही रहा जो आज एशिया है जबकि दूसरे उत्तरी महाद्वीप के अंतर्गत आज का उत्तरी अमेरिका, यूरोप और ग्रीनलैंड शामिल थे। दक्षिणी प्राक महाद्वीप जो आज के दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका, भारत, ऑस्ट्रेलिया और अंटार्कटिका से बने हुए थे, को वेगेनर ने Edward Suess के अनुकरण पर ''गोंडवाना लैण्ड'' का नाम दिया। उसने लिखा कि Cretaceous period में गोंडवाना लैण्ड भी टूटने लगा जबकि दूसरे उत्तरी महाद्वीप के खंड Late Cenozoic Era, लगभग 3 मिलियन वर्ष पूर्व तक जुड़े रहे। जैसे जैसे भूभाग के खंड अलग होते रहे, वे पश्चिम की तरफ और विषुवत रेखा की और बढ़ने लगे।

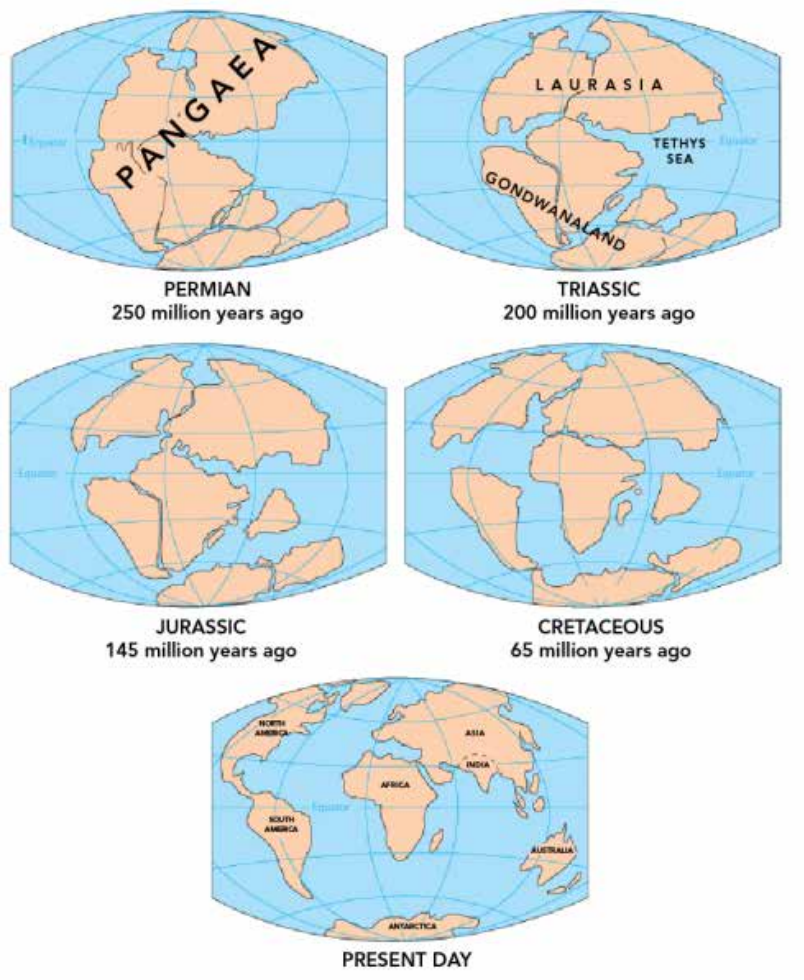

विरोध

वेगनर का सिद्धांत शुरू से ही विवादों में घिर गया क्योंकि यह भूगर्भ वैज्ञानिकों की तत्कालीन दो स्थापित मान्यताओं के विरुद्ध था।

पहली मान्यता यह थी कि आधुनिक महाद्वीप पुराने काल में भूमिसेतु से जुड़े हुए थे जो कालांतर में बीच के (मध्यवर्ती) सागर में डूब गये। जीवाश्म वैज्ञानिक इस मान्यता के पक्षधर थे क्योंकि इस आधार पर यह समझना आसान था कि एकसमान या मिलती–जुलती प्रजातियों के पादप और पशु तथा उनके जीवाश्म धरती विभिन्न दूरस्थ भागों क्यों मिलते हैं। यह संभव था कि जोड़नेवाले सेतुओं के द्वारा उन अलग–अलग भागों में बीच में समुद्र होने के व्यवजूद आवागमन कर सके हों।

भूगर्भ वैज्ञानिकों की दूसरी व्यापक मान्यता बड़े भूभाग के सागर मे डूबने को लेकर थी। उनके अनुसार पृथ्वी आरंभ में अति उष्म अवस्था में थी और धीरे–धीरे उसका तापमान कम होता रहा। इस तरह ठंडे होते जाने पर उसके आकार में संकुचन और उसके सतह पर सिकुड़न आता गया। विषम सिकुड़न से पृथ्वी की सतह के कुछ क्षेत्र ऊपर उठ गये जो पर्वत बन गये जबकि कुछ अन्य क्षेत्र जल की सतह से

भी नीचे चले गये। वेगनर ने उपरोक्त दोनों स्थापनाओं को स्वीकार नहीं किया और उपलब्ध वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर उनका खंडन भी किया। उनके अनुसार रेडियोधर्मी पदार्थों के द्वारा ऊष्मा उत्सर्जन के कारण आवश्यक नहीं है कि पृथ्वी का core ठंडा हो रहा हो। दूसरे, संकुचन के सिद्धांत से यह समझना कठिन है कि पर्वतों का निर्माण अलग–अलग समय में या किन्ही विशेष स्थानों में ही क्यों हुआ। अब अगर पृथ्वी संकुचित नहीं हो रही थी तो बृहत भूखंड के साग में विलुप्त हो जाने का कोई कारण नहीं है। वेगनर ने दावा किया कि "isostacy" के स्वीकृत सिद्धांत के आधार पर किसी बृहत भूखंड के डूब जाने की संभावना नहीं है। इस तरह का भूखंड प्लावित हो सकता है पर डूब नहीं सकता जब तक कोई भारी वज़न उस पर न रखा गया हो और भूगर्भीय अतीत में ऐसी कोई घटना हुई हो ऐसी जानकारी नहीं है।

वेगनर जानते थे कि उनका सिद्धांत तत्कालीन कई भूगर्भशास्त्रीय स्थापित मान्यताओं का खंडन करता है, अतएव इस सिद्धांत के प्रतिपादन के बाद के दो दशक उन्होंने भूविज्ञान की विभिन्न शाखाओं जैसे geodesy, geophysics, geology, paleontology, and paleoclimatology से अपनी धारणाओं के समर्थन में तथ्य संग्रह करने में लगाए। तत्कालीन समय को देखते हुए उनका यह प्रयास अभूतपूर्व था, विशेषकर इस संदर्भ में कि उनके समकालीन वैज्ञानिक शायद ही अपने विशिष्ठ क्षेत्रों के बाहर कदम रखते थे। तमाम साक्ष्यों को जुटाने के व्यवजूद वेगनर ने यह स्वीकार किया कि ये सब उनके सिद्धांत को समर्थित तो करते है अथवा सामंजस्य में आते हैं, किन्तु साबित या प्रमाणित नहीं करते। फिर भी वेगनर यह मानते रहे कि अप्रत्यक्ष ही सही, उनके साक्ष्य/तथ्य उनके सिद्धांत के प्रमाण के तुल्य हैं। उनके द्वारा वर्णित कुछ साक्ष्य इस प्रकार हैं:

1. Geodesic माप के आधार पर Greenwich की तुलना में ग्रीनलैंड के देशान्तर (Longitude) में वृद्धि जो इस बात को साबित करता है कि ग्रीनलैंड का विस्थापन आज भी सक्रिय है।

2. वेगनर ने साक्ष्य परतूत किया कि पृथ्वी का बाह्य आवरण दो परतों का बना हुआ है और दोनों परतें अलग अलग पदार्थों से बनी हुई है। समुद्र तल से ऊपर की भूमि और महाद्वीपीय शेल्फ तक के समस्त भूखंड को उन्होंने "Sial" परत का नाम दिया क्योंकि इसमें सिलिकन और एल्युमिनियम के खनिजों की प्रधानता है। यह परत ग्रेनाइट जैसे हल्की चट्टानों से बना है। Sial परत महाद्वीप के ऊपर लगभग 100 km मोटी है किन्तु सागर तल पर केवल 3 km मोटी ही रह जाती है या बिल्कुल विलुप्त भी हो जाती है। Sial के नीचे की परत "Sima" है जिसमें सिलिकॉन और मैग्नेशियम के खनिजों की प्रधानता है। यह परत घनत्व में Sial से अधिक है और बेसाल्ट जैसे चट्टानों से बनी है। वेगनर का मानना था भूगर्भीय समय के पैमाने पर लगे बलों के प्रभाव में ठोस होते हुए भी Sima एक तरल श्यान द्रव (viscious liquid) की तरह काम करता है। दूसरे, अगर पेवेजेंल के कारण इस परत का ऊपर उठना या नीचे हो जाना किसी तरल द्रव की तरह संभव है, जैसे कि Scandinavia के ऊपर उठ जाने से प्रतीत होता है, तो क्षैतिज दिशा में भी यह भले अत्यंत काम हो परंतु गति संभव है। वेगनर का ख्याल था कि Sial के खंड (महाद्वीप और द्वीप) Sima की परत में वैसे ही चलते हैं जैसे हिमखंड ध्रुवीय सागर में प्लावित और गतिमान रहते हैं।

3. वेगनर ने भूगर्भ विज्ञान से कई उदाहरण दिए जो दर्शाते हैं कि कुछ महाद्वीप अतीतकाल आपस में जुड़े हुए थे। जैसे South Africa के Cape Mountains और Sierra de la Ventana के चट्टानों के बीच समानता या फिर साउथ अफ्रीका और ब्राजील के विस्तृत चट्टानी समतल का एक समान होना, जिनसे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इन चट्टानों के बनने से पूर्व ये भूभाग कभी एक साथ रहे होंगे। वेगनर ने इस तरह के कई और उदाहरण भी दिए और यह भी बताया कि महाद्वीपीय विस्थापन के कारण पर्वतों और द्वीपों का निर्माण किस तरह संभव है।

4. वेगनर ने यह भी बताया कि अलग अलग महाद्वीपों में पाये जानेवाले पौधों और पशुओं के

जीवाश्मों में समानता कि व्याख्या भी विस्थापन के सिद्धांत से ही संभव है। इस संदर्भ में उन्होंने Glossopteris नामक फ़र्न और Permian era के छोटे सरीसृप (Reptiles) का जिक्र किया जिनके जीवाश्म India, Australia, South America, South Africa और Antarctica से प्राप्त हुए हैं। इन समस्त भूभागों को ही वेगनर ने बृहत महाद्वीप Gondwana Land कहा था। Mesosaur के जीवाश्म सिर्फ साउथ अफ्रीका और ब्राजील में मिलते हैं।

5. वेगनर ने जीवित Species के भी उदाहरण दिए जिनमें दक्षिण–पश्चिम ऑस्ट्रेलिया की कुछ प्रजातियाँ शामिल हैं जिनका निकट संबंध India, Ceylon, Madagascar, and southern Africa के जीवों से है। यह ऑस्ट्रेलिया का संपर्क Gondwana Land के Jurassic period में विघटन के पूर्व इन भूभागों से दिखलाता है।

विस्थापन संबंधी बल

वेगनर के अनुसार महाद्वीपीय विस्थापन के दो कारण थे: 1. पोलर या ध्रुवीय Fleeing बल और 2. ज्वारिय बल (Tidal force)। ध्रुवीय बल पृथ्वी के घूर्णन (Rotation) से संबंधित है। भूमध्य रेखा पर पृथ्वी के उभरे होने का कारण यही बल है। ज्वारीय बल सूर्य और चंद्रमा के आकर्षण से संबंध रखता है जिसके कारण सागर में ज्वार भाटा आते हैं। वेगनर मानते थे कि करोड़ों वर्ष के दौरान ये बल प्रभावशाली बनकर विस्थापन के लिए सक्षम हो गए होंगे। वेगनर के सिद्धांत का यह सबसे कमजोर पक्ष था जिसकी पुरजोर आलोचना बाद में हुई और वेगनर के सिद्धांत को खारिज करने के लिए आलोचकों के काम आया।

वेगनर के सिद्धांत पर प्रतिक्रिया

विस्थापन का सिद्धांत प्रारंभ से ही अनेक विवादों का शिकार रहा। इसे व्यर्थ का प्रलाप अथवा किसी कवि का स्वप्न तक कहा गया। ब्रिटिश भूविज्ञानी फिलिप लेक ने 1922 में तीखी आलोचना करते हुए वेगनर के साक्ष्यों के विरुद्ध कई तर्क प्रस्तुत किये। कुछ अन्य वैज्ञानिकों ने महाद्वीप के क्षैतिज विस्थापन कि संभावना को मानते हुए भी वेगनर की व्याख्या से सहमत नहीं हुए। प्रसिद्ध भूभौतिकविद Harold Jeffreys (1891–1989) ने कहा कि वेगनर द्वारा बताये गए ध्रुवीय और ज्वारीय बल महाद्वीप के विस्थापन के लिए आवश्यक बल कि तुलना में दस लाख गुना कम हैं।

वेगनर के विचारों की सबसे तीखी आलोचना अमेरिका में हुई। American Association of Petroleum

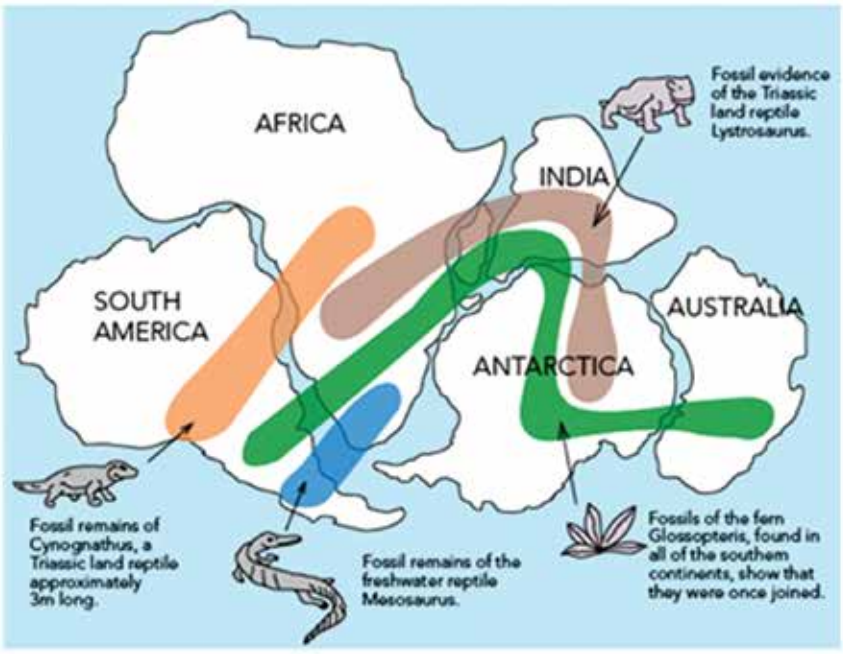

Geologists (AAPG) ने New York City में नवम्बर 15, 1926 को वेगनर के महाद्वीपीय सिद्धांत पर बहस लिए एक Symposium का आयोजन किया। इस आयोजन में अधिकतर वक्ताओं ने वेगनर के विचारों का विरोध किया। लेकिन सबसे तीव्र विरोध वेगनर के प्रस्तावित बलों को लेकर था जो महाद्वीपों के संचालन के लिए पूरी तरह अपर्याप्त माने गये। कई इतिहासकार वेगनर के सिद्धांत के प्रति तीव्र भावपूर्ण विरोध का कारण सिर्फ वैज्ञानिक आधार नहीं मानते हैं। उनके अनुसार वेगनर मौसम वैज्ञानिक थे, भूगर्भविज्ञानी, भूभौतिक विज्ञानी अथवा जीवाश्म विज्ञानी नहीं थे। अतः इन क्षेत्रों के लिए वह एक बाहरी व्यक्ति समझे गये जिसे भूगर्भ शास्त्र के विषय पर टिप्पणी करने का कोई अधिकार नहीं था। Charles Schuchert लिखते हैं, "It is wrong for a stranger to the facts he handles to generalize from them to other generalizations."

AAPG के 1926 में किये गये सख्त विरोध का दुखद परिणाम यह हुआ कि अगले कई दशकों तक वेगनर का सिद्धांत घोर उपेक्षा का शिकार हो गया। Ursula B. Marvin "Continental Drift: The Evolution of a Concept" में लिखते हैं "Partly as a result of that symposium, more than 35 years were to pass before American geologists would meet again for the purpose of seriously discussing continental drift."

एक सर्द मौत

1928 के पश्चात वेगनर ने अधिक समय अपने सिद्धांत की व्यापक अस्वीकृति के विषय में चिंतन करने पर नहीं लगाया। कारण था कि ग्रीनलैंड अभियान पर लौटने का अवसर उनका उत्साहवर्धन कर रहा था। वे आर्कटिक Ice बंच पर ऋतु परीक्षण केंद्र स्थापित करना और वहाँ भूकंपीय तरंगों की माप लेना चाहते थे। उनके दल के द्वारा एकत्रित इन जानकारियों से पता चलता कि ग्रीनलैंड के मौसम का कितना प्रभाव उत्तरी यूरोप पर पड़ता है। साथ ही उत्तरी अटलांटिक में जहाज के परिवहन और उत्तरी अमेरिका तथा यूरोप के बीच वायु परिवहन के लिए इन परीक्षणों से लाभ मिलता।

इस अभियान में शुरू से ही कई अड़चनें आयी और मौसम कि खराबी के कारण अत्यधिक विलंब भी हुआ। अभियान पूरा करने और सुरक्षित वापस आने कि अवधि कम रह गई। लेकिन वेगनर ने साहस और दृढ़निश्चय के साथ अभियान को संचालित किया। नवम्बर, 1931 में प्रावधानों की कमी हो जाने पर अपने अभियान दल के कुछ सदस्यों को ग्रीनलैंड के Mid Ice स्टेशन पर ही छोड़कर उन्हें West Station लौटने का निर्णय लेना पड़ा। दुखद बात ये रही कि ग्रीनलैंड के Mid Ice ग्लेशियर से West Station की कठिन मौसम में यात्रा वे पूरी नहीं कर सके। 8 मई, 1931 को बर्फ में दबा हुआ उनका शव एक दूसरे अभियान दल को मिला। उसी दूसरे दल के एक सदस्य Karl Weiken ने लिखा है कि "Wegener's face appeared "relaxed, peaceful, almost smiling" and "looked more youthful than it had before." वेगनर की मृत्यु बर्फ में जम जाने से या भूख से नहीं बल्कि अतिपरिश्रम के कारण हृदयगति रुक जाने से हुई थी। आज वेगनर के सभी अवशेष सर्द बर्फ में विलुप्त हो गये हैं।

पुनःप्रवर्तन

ब्रिटिश वैज्ञानिक आर्थर होम्स (Arthur Holmes, 1890–1965) महाद्वीपीय विस्थापन पर विश्वास करनेवाले और सबसे बड़े समर्थक साबित हुए। 1930 के दशक में उन्होंने संवहन धाराओं के माध्यम से महाद्वीप के विस्थापन कि संभावना व्यक्त की। ये संवहन धारायें

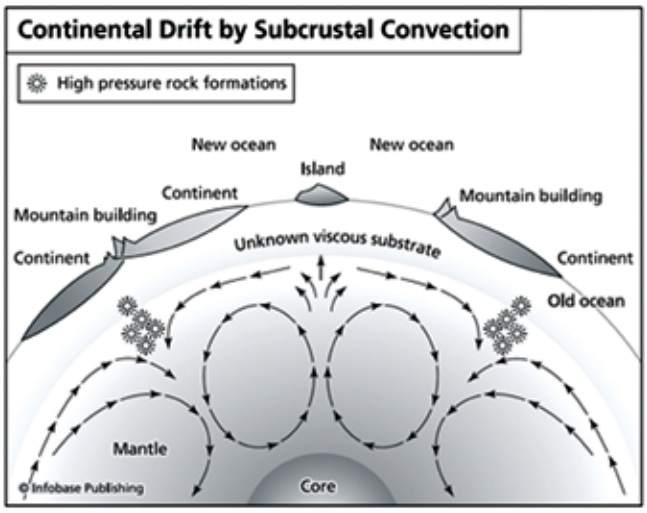

In a 1929 article, Arthur Holmes suggested that convection currents in the Earth's mantle might be able to move the continents in the way that Alfred Wegener had suggested. Harry Hess would later adapt some of Holmes's ideas in his own theory of seafloor spreading.

रेडियो सक्रिय तत्त्वों के विघटन से होने वाले ताप कि भिन्नता के कारण Mantle में उत्पन्न होती हैं। पूरे Mantle में इस तरह कि धाराओं का तंत्र विद्यमान होता है जो महद्वीपों में विस्थापन या संचलन पैदा करता है। समकालीन वैज्ञानिक होम्स कि इस वैज्ञानिक व्याख्या को नकार नहीं सके।

नए अनुसंधान और महाद्वीपीय विस्थापन का नवयुग

मध्य महासागरीय कटक (Mid Oceanic Ridge)

द्वितीय महायुद्ध और उसके बाद समुद्र विज्ञान के अनुसंधान में व्यापक वृद्धि हुए और नई खोजों का पता चल। अटलांटिक महासागर में भूकंपीय सवेक्षणों से Mid-Atlantic Ridge की खोज हुई जो अटलांटिक महासागर के तल पर पर्वतों जैसी श्रृंखला है। इस तरह की पर्वतमालायें सभी सागरों में पायी गयीं। कुल मिलाकर 64000 कि.मी. सर्पाकार आकृति में यह पर्वत श्रृंखला पूरी पृथ्वी के चारों ओर बेसबाल के Seam की तरह फैली हुई है। इन जलमग्न पर्वतों (कटकों) के मध्यवर्ती भाग में गहरी खाइयाँ (Rift) हैं जिनमें निरंतर ज्वालामुखी फूटता रहता है और गरम लावा निकलता रहता है। इन लावा के ठंडा होने पर चट्टानों कि नई परतें बनती हैं। Heezen (1952, 1956) आदि वैज्ञानिकों का विश्वास हो गया कि ये खाइयाँ पृथ्वी के भूपटल/भूपर्पटी (Crust) की गहरी दरारें हैं जिनसे निकले हुए लावा से सागर तल में नए भूपर्पटी का निर्माण होता है। Heezen ने इसे "the wound that never heals." कहा। ये जलमग्न कटक सक्रिय भूकंपीय क्षेत्र भी हैं। इनके अतिरिक्त कुछ महाद्वीप के किनारे भी सक्रिय भूकंपीय क्षेत्र हैं।

इसी दौरान पुराचुंबकीय क्षेत्र में महत्वपूर्ण अनुसंधान हुए जिनसे महासागरीय कटकों की चट्टानी परतों के काल निर्धारण में सहायता मिली। साथ ही यह भी पता चल कि अतीतकाल में उत्तरी या दक्षिणी ध्रुव एक स्थान पर नहीं रहे और महाद्वीप के स्थान में भी परिवर्तन हुए हैं। महासागरीय पर्पटी के काल निर्धारण से यह तथ्य स्पष्ट हुआ कि महासागर के नितल कि चट्टानें महाद्वीप में पायी जानेवाले चट्टानों की तुलना में नवीन हैं। दूसरे, महासागर के कटक के दोनों ओर बराबर दूरी पर स्थित चट्टानें काल और संरचना में एक समान हैं। महासागरीय पर्पटी की चट्टानें कहीं पर भी 200 मिलियन वर्ष से अधिक पुरानी नहीं हैं।

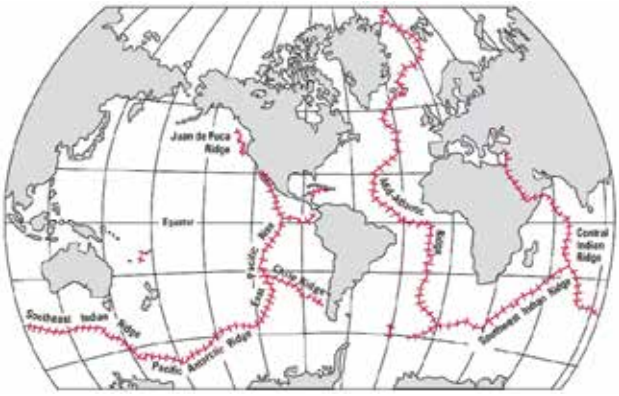

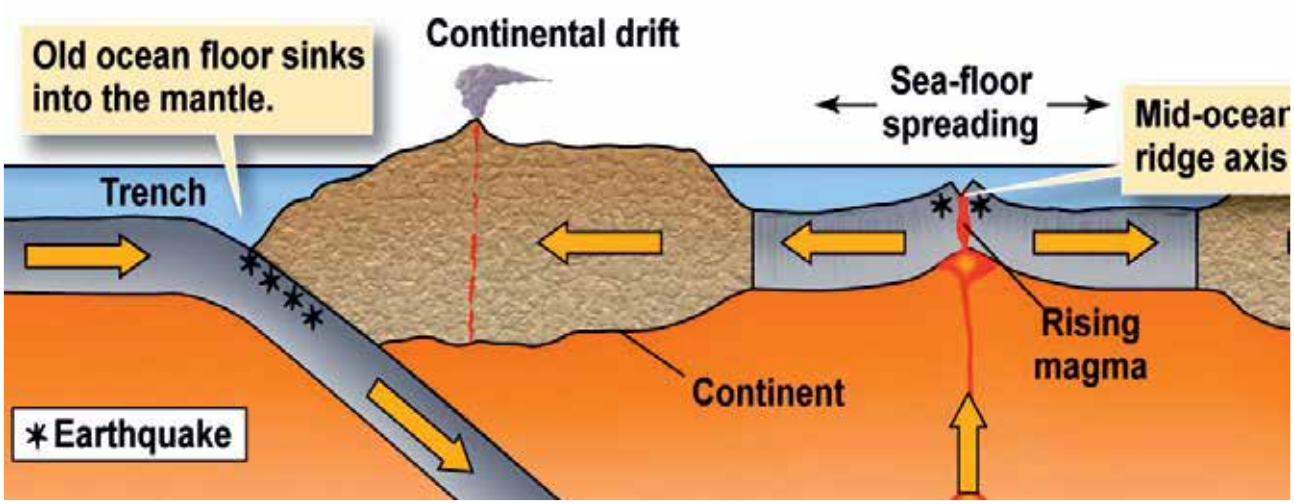

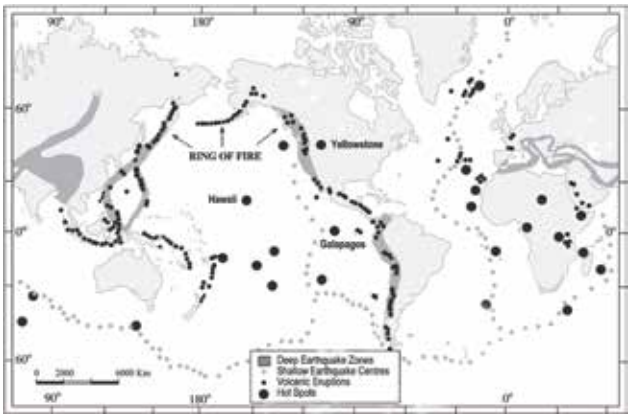

सागरीय अधस्तल विस्तार (Sea Floor Spreading)

उपरोक्त तथ्यों और महासागरीय कटक के दोनों तरफ के चट्टानों के चुंबकीय गुणों का विश्लेषण करते हुए 1961 में Harry Hess ने एक परिकल्पना प्रस्तुत की जिसे Sea Floor Spreading कहा गया। इस परिकल्पना के अनुसार कटकों के मध्यवर्ती भागों में निरंतर ज्वालामुखी के उद्‌भेदन से नया लावा निकलकर दरारों को भर रहा है और साथ ही में महासागरीय पर्पटी को दूर भी धकेल रहा है। इस तरह महासागर के अधस्तल का विस्तार हो रहा है। लेकिन दूसरी तरफ महासागरीय गर्तों (Trenches) में पूर्व निर्मित पर्पटी का विनाश भी हो रहा है। यह प्रक्रिया सतत जारी है, जिसकी महाद्वीपों के संचलन में महत्वपूर्ण भूमिका है।

प्लेट विवर्तनिकी (Plate Tectonics)

इस तरह हम देखते हैं कि 1950 और 1960 के दशकों में ऐसे नवीन साक्ष्यों की खोज हुई जिनसे महाद्वीपों के स्थिर होने की बजाय गतिशील होने की अवधारणा को बल मिला। वेगनर की उपेक्षित महाद्वीपीय सिद्धांत की कुछ अर्थों में पुष्टि तो हुई परंतु उनकी मूल अवधारणाओं में कई संरचनात्मक परिवर्तन साथ।

सागर नितल प्रसरण अवधारणा के पश्चात Mckenzie, Parkar और Morgan उपलब्ध अनुसंधानों को समन्वित कर 1967 में स्वतंत्र रूप से एक अवधारणा प्रस्तुत की जिसे प्लेट विवर्तनिकी कहा जाता है। प्लेट विवर्तनिकी में विवर्तनिकी (Tectonicus) शब्द यूनानी भाषा से बना है जिसका अर्थ निर्माण से सम्बंधित है। प्लेट शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग कनाडा के भूविज्ञानी टुजो विल्सन (Wilson) ने किया था और प्लेट टेक्टोनिक्स शब्द का पहली बार प्रयोग मोर्गन (Morgan) द्वारा किया गया था।

इस सिद्धान्त के अनुसार पृथ्वी की ऊपरी लगभग 80 से 100 कि०मी० मोटी परत, जिसे स्थलमण्डल (Lithosphere) कहा जाता है, और जिसमें भूपर्पटी और भूप्रावार शामिल हैं, कई अनियमित टुकड़ों में टूटी हुई है जिन्हें प्लेट कहा जाता है। ये प्लेटें नीचे स्थित दुर्बलतमंडल (Asthenosphere) की अर्धपिघलित परत पर क्षैतिज अवस्था में चलायमान है। स्थलमंडल में पर्पटी और Mantle के ऊपरी हिस्से को सम्मिलित माना जाता है। प्लेटें महासागरीय अथवा महाद्वीपीय हो सकती हैं जो इस बात पर निर्भर है कि उनका अधिकांश भाग महासागर या महाद्वीप से संबद्ध है।

पृथ्वी का स्थलमंडल सात मुख्य और अन्य कई छोटे प्लेटों मे बंटा हुआ है। सात मुख्य प्ले इस प्रकार हैं: African, Antarctic, Eurasian, Indo-Australian, North American, Pacific and South American. प्लेटों के बीच की सापेक्षिक गति 0–10 cm/वर्ष आँकी गई है।

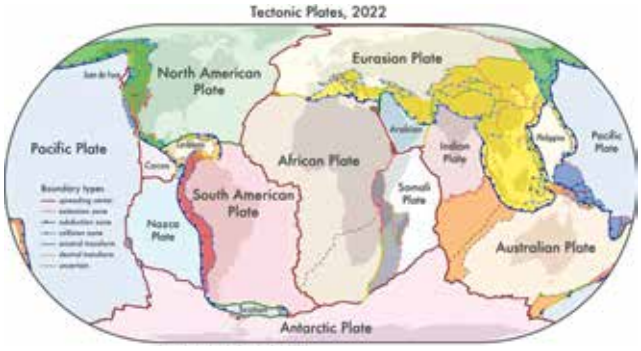

पृथ्वी पर प्लेट पिछले 3.4 बिलियन वर्षों से लगातार विचरण कर रही है। वेगनर की संकल्पना कि महाद्वीप गतिमान हैं आज के वैज्ञानिक आधार पर पूरी तरह सही नहीं थी। बल्कि महाद्वीप प्लेट का भाग है और प्लेट गतिशील हैं। प्लेटों के संचरण की स्थिति से तीन तरह सीमाएं बनती हैं जो इन प्लेटों के आपसी संबंध और संपर्क को परिभाषित करती हैं। ये सीमाएं इस प्रकार हैं:

1. अपसारी सीमा (Divergent boundary): जब दो प्लेटें विपरीत दिशा में एक दूसरे से दूर जा

रही हों। इस अवस्था में नई पर्पटी का निर्माण होता है। इसे Spreading site भी कहते हैं। मध्य–अटलांटिक कटक इसका सबसे अच्छा उदाहरण है।

2. अभिसरण सीमा (Convergent Boundary): जब एक प्लेट दूसरी के नीचे धंस रही हो। यहाँ भूपर्पटी नष्ट होती है। इसे Subduction zone भी कहा जाता है। Indian प्लेट का Eurasian प्लेट के नीचे जाना इसका उदाहरण है। हिमालय की उत्पत्ति का कारण Indian प्लेट का Eurasian प्लेट से टकराना ही है।

3. रूपांतर सीमा (Transform Boundary): जब एक प्लेट दूसरे से क्षैतिज दिशा में सरक रही हो। यहाँ न तो पर्पटी का निर्माण होता है न विनाश। इस सीमा पर रूपांतर faults बनते हैं। मध्य महासागरीय कटकों के लम्बवत पाए जानेवाले निसज इसके उदाहरण हैं।

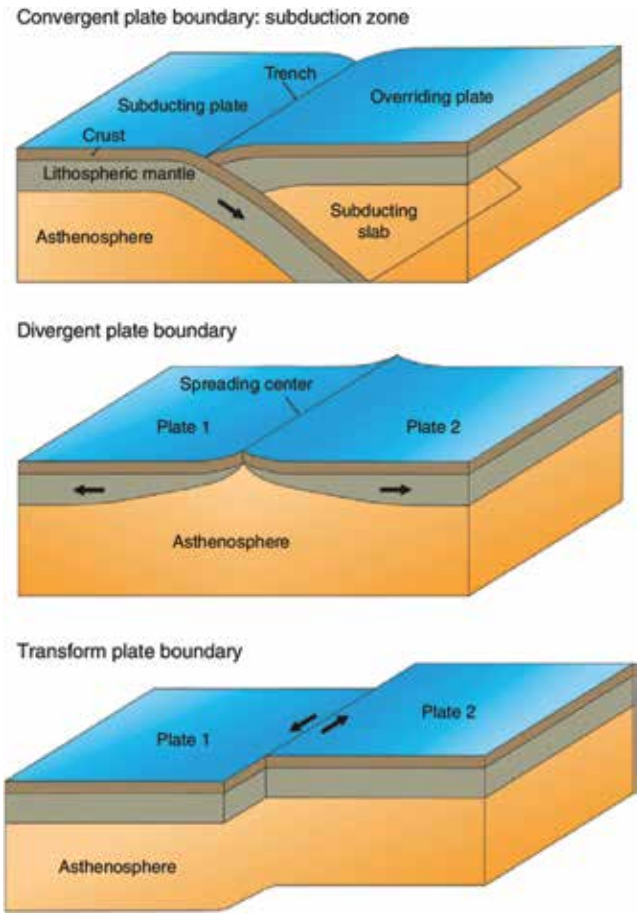

Iceland नॉर्थ अमेरिकन प्लेट और यूरेशीयन प्लेट की अपसारी सीमा पर अवस्थित है। यह सीमा मिड अटलांटिक Ridge (कटक) का भाग है। यए अपसारी सीमा की वजह से ही Iceland का विलक्षण भूगोल और भूगर्भ विकसित हुआ है।

भारत की जलयात्रा

Indian plate ने यूरेशिया से जुडने से पहले एक लंबी जलयात्रा की है। लगभग 100 मिलियन वर्ष पूर्व दक्षिण ध्रुव के पास गोंडवाना लैण्ड से अलग होने के बाद यह उत्तर की ओर चलता रहा। 90 मिलियन वर्ष पूर्व मडागास्कर से अलग होने पर इसकी गति लगभग 20 cm/वर्ष रही। ऐसा मन जाता है कि लगभग 50 मिलियन वर्ष पूर्व यह यूरेशिया से टकराया और तिब्बत प्लेट के नीचे जाने लगा। हिमालय पर्वतमाला के उद्भव का कारण यह टकराव ही है। Indian plate की गति आज भी जारी है और अनुमान किया जाता है कि इसलिए हिमालय की ऊंचाई आज भी बढ़ रही है।

अंतिम स्वीकृति

प्लेट टेक्टानिक्स या प्लेट विवर्तनिकी आज का सर्वमान्य भूवैज्ञानिक सिद्धांत है। पर्वतों की उत्पत्ति, महासागरों का निर्माण और विनाश, भूकंपीय गतविधियों का होना, ज्वालामुखियों का फूटना तथा द्रोणियों का निर्माण व संरचना आदि अनेकानेक भूगर्भीय घटनाएं प्लेट विवर्तनिकी के आधार पर ही व्याख्यायित की जाती है।

प्लेट विवर्तनिकी का इतिहास अल्फ्रेड वेगनर के विस्थापन सिद्धांत से प्रारंभ होता है। दूरगामी सोच के व्यवजूद उनका सिद्धांत दशकों तक घोर विरोध और उपेक्षा का शिकार रहा। दुख की बात ये है के अपने जीवनकाल में वे अपनी अवधारणाओं की स्वीकृति नहीं देख पाए।

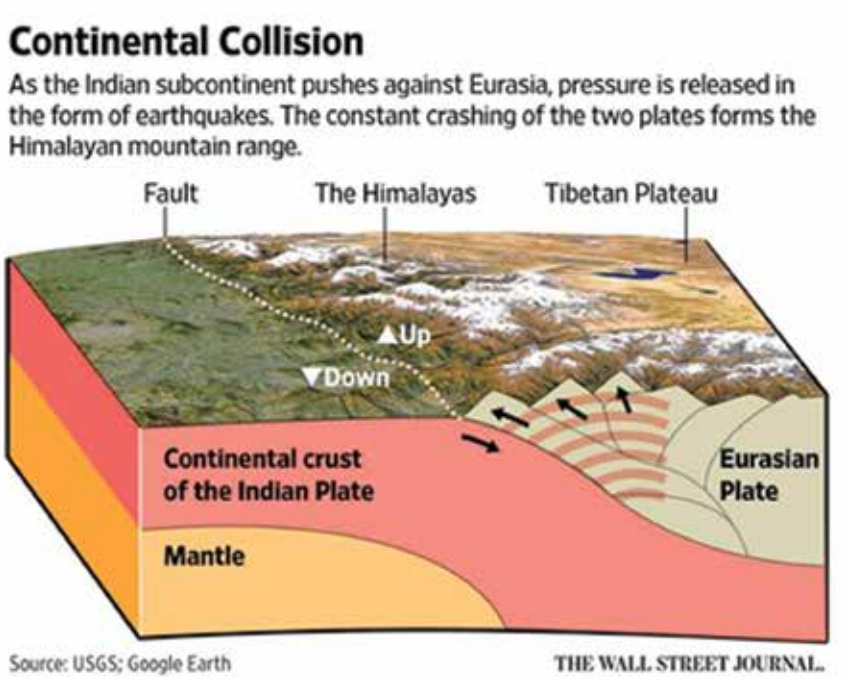

1 नवंबर 1930 में अपनी अंतिम यात्रा से पहले उन्होंने पचासवाँ वर्षगांठ ग्रीनलैंड के weather station पर ही कुछ साथियों के साथ मनाया था। उसके बाद वे जीवित नहीं बचे। उनका शव –50 डिग्री सेल्सियस तापमान के बर्फ का हिस्सा बन गया जो एक विशाल ग्लेशियर में उतर रहा है।

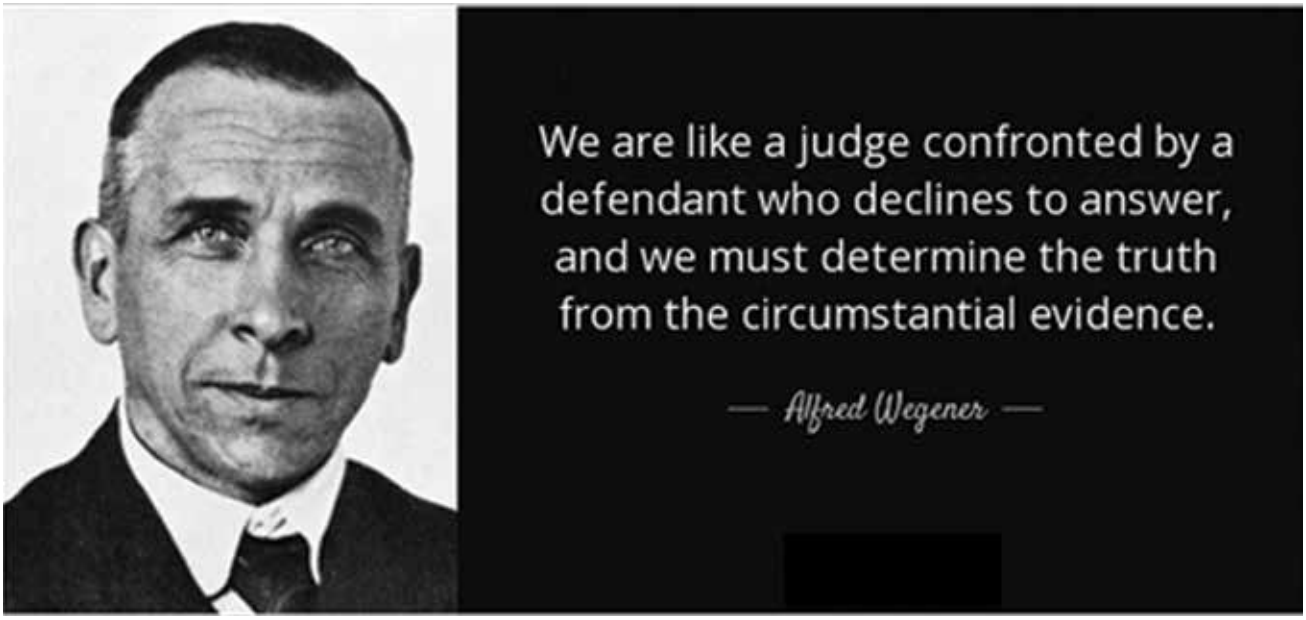

महानिदेशालय में
हिन्दी पखवाड़ा-2022 एवं अन्य गतिविधियाँ

DGH
DGH
DGH
DGH
सप्टेम्बर, 2022

टीम हृदयंगम

डॉ. मदन राय

श्रीमती उदिषा वत्स

श्री वासुदेव बंसल

श्री योगेश कुमार वर्मा

श्री उज्जवल कुमार

श्री अरूणेश कुलश्रेष्ठ

श्री प्रवीण कुमार

श्री सुशील कुमार शुक्ला

श्री प्रशांक चंद्रा

टीम 'हृदयंगम' आपके सभी सुझावों व टिप्पणियों का स्वागत करती है। आप अपने सुझाव हमें udishavatsa@dghindia.gov.in पर मेल कर सकते हैं।

आभार

विगत वर्षों की भांति बड़े हर्ष के साथ हम इस वर्ष भी हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय की राजभाषा पत्रिका हृदयंगम का छठा अंक आप सब के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं। संपादक मंडल इस पत्रिका के लिए महानिदेशालय के कर्मचारियों का हृदय से आभार व्यक्त करता है, जिन्होंने अपने विविध सरल लेखों और कविताओं के द्वारा इस अंक को समृद्ध, व्यापक और ग्राह्य बनाया है।

इस पत्रिका का इस रूप में लाने में महानिदेशालय के राजभाषा विभाग को विशेष साधुवाद, जिनके भागीरथ प्रयास की वजह से हम इस पत्रिका को इस रूप में ला सके हैं।

उम्मीद है की हृदयंगम के विगत अंकों की तरह इस अंक को भी सराहा और आत्मसात किया जाएगा।

आभार
सुशील कुमार शुक्ला

यह हमारे लिये अत्यंत हर्ष का विषय है कि 'हृदयंगम' का यह छठा अंक एक नवीन कलेवर में हम सबके समक्ष उपस्थित है। राजभाषा हिन्दी की उन्नति एवं प्रसार के जिस उद्देश्य से इसका आरंभ हुआ था, उसकी प्राप्ति में यह पूर्णतया सफल हुई है। हिन्दी की प्रमुख विधाओं– कहानी, कविता एवं सामयिक लेखों से सज्जित एवं समृद्ध इस अंक के लिये संपादक मंडल उन सबका आभार व्यक्त करता है जिन्होने 'हृदयंगम' के इस अंक को अपनी अभिव्यक्ति के विविध आयामों द्वारा यह स्वरूप प्रदान किया है।

महानिदेशालय के राजभाषा विभाग की भी हम सराहना करना चाहेंगे जिनके प्रयास से आज यह पत्रिका को आपके समक्ष ला सके हैं।

आशा है कि हृदयंगम के इस अंक को भी आप सभी की ग्राह्यता एवं सराहना प्राप्त होगी।

आभार
उदिषा वत्स

हिंदी न केवल हिन्द की एक भाषा है बल्कि यह एक संस्कृति है जो सभी देशवासियों को एक सूत्र में पिरोती है। हिंदी राजभाषा वह धागा है जिसके साथ भारत में जन्मी सभी भाषाएँ जुड़कर एक परिवार की तरह देश को संगठित करती है। विगत अंकों की तरह, हृदयंगम के छठे अंक में प्रकाशित विभिन्न लेखकों की अभिव्यक्तियों को लेखों और कविताओं के माध्यम से संपादक मंडल का यह प्रयास है कि आपको अपनी हिंदी भाषा से स्वाभाविक रूप से जोड़ा जा सके। मैं सभी पाठकों को हृदयंगम के इस अंक को आत्मसात करने के लिए धन्यवाद देता हूँ और आने वाले अंक में अपना योगदान देने के लिए प्रार्थना करता हूँ जिससे हिंदी को और अधिक समृद्ध बनाया जा सके।

शुभेच्छा
वासुदेव बंसल

हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय, भारत सरकार

तेल उद्योग विकास बोर्ड भवन, प्लाट सं0 2, सेक्टर - 73, नोएडा - 201301

दूरभाष : 0120 - 2472000, 2472161, फैक्स : 0120-2472049

वेबसाइट : www.dghindia.gov.in

DGH INDIA DGH India @DGHIndia DGH India

SHARAD